सांध्य दैनिक

4PM

www.4pm.co.in | www.facebook.com/4pmnewsnetwork | @Editor_SanjayS | YouTube @4pm NEWS NETWORK

● वर्षः 11 ● अंकः 289 पृष्ठः 8 ● लखनऊ, गुरुवार 27 नवम्बर, 2025

मूल्य ₹ 3/-

फूलों की सुगंध केवल वायु की दिशा में फैलती है। लेकिन एक व्यक्ति की अच्छाई हर दिशा में फैलती है।

-चाणक्य

जिद...सच की

डब्ल्यूटीसी की अंक तालिका में भारत का... 7 | भाजपा के एजेंडे पर विपक्ष की... 3 | भाजपा ने सबसे ज्यादा संविधान... 2

महाराष्ट्र में निकाय चुनाव, उभर रहे घाव?

निकाय चुनावों के बीच सहयोगी दलों के बीच खटपट

- » खबर आई एकनाथ शिंदे गुंडो की तरह कर रहे हैं काम
- » केन्द्रीय मंत्री और बीजेपी सांसद रक्षा खडसे ने खुले मंच से कही बात
- » जलगवाई जिले में अनैतिक कार्यों में लिप्त लोगों को बढ़ावा दे रहे हैं डिप्टी सीएम एकनाथ शिंदे
- » सज्जन पुरूष और महिलाओं का घर से निकलना मुश्किल
- » केन्द्रीय मंत्री की बेटी को स्वंय झेलनी पड़ी थी मुसीबत

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

मुंबई। भारतीय राजनीति में आरोप लगना कोई नई बात नहीं है। लेकिन आरोप लगाने वाले कौन हैं यह अहम है और यही चीज हमेशा कहानी का मोड़ बदल देती है। अगर विपक्ष आरोप लगाये तो उसे सियासी नौटंकी कहकर ठहाके लगा दिए जाते हैं। लेकिन जब अपने ही सगे लोग आरोप लगाये तो बात कुछ अलग होती है। जी हां केंद्रीय मंत्री और बीजेपी सांसद रक्षा खडसे ने खुले मंच से एनडीए सहयोगी दल शिवसेना नेता पर गभीर आरोप लगाएं है।

उन्होंने कहा है कि उप-मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे गुंडों की तरह काम कर रहे हैं। उनके इन आरोपों और टिप्पणी के बाद अब मामला राजनीति नहीं बल्कि सत्ता की तासीर बयान करने के लिए काफी है। यह भारत है यहां चुनावों के वक्त मुर्गियों के दड़बे में भी खटपट शुरू हो जाए तो समझिए दाल में कुछ नहीं थाली भरकर कुछ काला है। और महाराष्ट्र में तो अभी निकाय चुनावों की उल्टी गिनती शुरू है इसलिए बर्दाश्त की सीमा उतनी ही पतली है जितनी गठबंधन की निष्ठा।

आरोपों का तूफान

केन्द्रीय मंत्री रक्षा खडसे के आरोप हवा में उछला हुआ कोई लतीफा नहीं है। उनके आरोप हैं कि उपमुख्मंत्री एकनाथ शिंदे जलगांव जिले में अनैतिक कामों को संरक्षण दे रहे हैं। आपराधिक गतिविधियों में संलिप्त लोगों को सियासी छत मुहैया करा रहे हैं। महिलाओं और सज्जन पुरुषों का घर से निकलना मुश्किल है। उन्होंने यह कहकर सनसनी फैला दी है कि उनकी बेटी स्वंय उत्पीड़न का शिकार रही है। एकनाथ शिंदे की तरह ही अजीत पवार भी नाराज चह रहे हैं। गौरतलब है कि एकनाथ शिंदे की तर्ज पर महाराष्ट्र कैबिनेट में दूसरे उपमुख्यमंत्री अजीत पवार भी नाराज चल रहे हैं और अक्सर गठबंधन को असहज करने वाले बयान जारी कर देते हैं। महाराष्ट्र में बीजेपी की स्थिति उस व्यक्ति जैसी है जिसने दो शेर पाले हों और दोनों ही शेर आपस में लड़ रहे हों। सनद रहे कि अजीत पवार नाराज होंगे तो ओबीसी वोट बैंक हिलेगा और शिंदे नाराज होंगे तो मराठा वोट बैंक खिसकेगा। यह बीजेपी का गुड गर्वनेंस ही है कि वह एक ही वक्त में दोनों को खुश रखने की कोशिश में खुद परेशान है। मगर इतिहास बताता है कि बीजेपी जब किसी सहयोगी दल में खटपट देखती है तो परिणाम दो ही होते हैं मौन आघात या आपरेशन गेम फिनिश शिवसेना के साथ क्या हुआ था यह मुंबई की हवा भी बताती है।

पॉवर पालिटिक्स का दांव

उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे के बयान हो या फिर उनकी कार्यप्रणाली मुख्यमंत्री को फडणवीस लगातार असहज स्थति में खड़ा कर रही है और बड़ा सवाल यही है कि क्या रक्षा खडसे को शिंदे की पावर पालिटिक्स को कंट्रोल करने के लिए आगे किया गया है। क्योंकि निकाय चुनावों में भी शिंदे ज्यादा सीटे मांग रहे हैं और अपने लोगों को आब्लाइज करना चाहते हैं। गौरतलब है कि राजनीति में धोखा फायदेमंद हो सकता है । बशर्ते समय छोटा हो। लंबी रेस में धोखा देना हमेशा धोखा खाने पर खत्म होता है। अभी निकाय चुनाव बीते नहीं हैं और महाराष्ट्र की राजनीति का असली ड्रामा शुरू हुआ है। आने वाले दिनों में क्या होगा? या तो शिंदे हीरो बनेंगे या गठबंधन उन्हें जीरो बनाकर फाइल बंद कर देगा। बाकी जनता तो तमाशा देख ही रही है क्योंकि राजनीति में तमाशा जितना बड़ा होता है ध्वंस उतना करीब आ जाता है।

बैनर पर सियासी घमासान

महाराष्ट्र में एक चुनावी बैनर को लेकर सियासी घमासान मचा है। इसे लेकर शिवसेना (यूबीटी) के वरिष्ठ नेता और विधान परिषद में विपक्ष के नेता अंबादास दानवे ने डिप्टी सीएम एकनाथ शिंदे और उनके गुट पर तीखा हमला बोला है। दरअसल सोशल मीडिया पर इन दिनों एक चुनावी बैनर वायरल है, जिसमें एकनाथ शिंदे, सोनिया गांधी और राहुल गांधी तीनों एक साथ नजर आ रहे हैं, दानवे ने यह फोटो शेयर कर शिंदे पर सीधा प्रहार किया। उन्होंने आरोप लगाया कि बालासाहेब के विचारों' को खूंटी पर टांग दिया है। उद्धव ठाकरे गुट के नेता अंबादास दानवे ने अपने आधिकारिक एक्स अकाउंट पर यह बैनर शेयर किया है। इस बैनर में महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे, कांग्रेस की पूर्व अध्यक्ष सोनिया गांधी, कांग्रेस सांसद राहुल गांधी तीनों के फोटो एक साथ दिखाई दे रहे हैं। खास बात यह है कि बैनर पर शिंदे के नेतृत्व वाली शिवसेना का धनुष-बाण चुनाव चिह्न भी साफ दिखाई दे रहा है।

> “ गठबंधन भाजपा के वरिष्ठ नेतृत्व के कारण नहीं, बल्कि चव्हाण के कारण टूटा है।
>
> नीलेश राणे, शिवसेना विधायक

सिंधुदुर्ग में भाजपा व शिवसेना में मची रार

शिवसेना विधायक नीलेश राणे ने भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की महाराष्ट्र इकाई के अध्यक्ष रवींद्र चव्हाण को सिंधुदुर्ग में दो दिसंबर को होने वाले नगर परिषद और नगर पंचायत चुनाव से पहले महायुति गठबंधन टूटने का दोषी ठहराया है। नीलेश राणे ने सिंधुदुर्ग नव गठित शहर विकास आघाडी के प्रचार अभियान के दौरान शुक्रवार को कहा कि गठबंधन भाजपा के वरिष्ठ नेतृत्व के कारण नहीं, बल्कि चव्हाण के कारण टूटा है। राणे और चव्हाण के बीच संबंध तनावपूर्ण रहे हैं। राणे ने सवाल किया, “यदि रत्नागिरी के राजापुर और लांजा में शिवसेना के साथ सीट बंटवारा संभव था और

ऐसा समायोजन चिपलुन में भी हो सका, तो सिंधुदुर्ग के प्रति नाराजगी क्यों?” उन्होंने दावा किया, “मालवन में हम 10 सीट देने को तैयार थे और सवंतवाडी में (शिवसेना नेता) दीपक केसरकर 50-50 फॉर्मूले के लिए तैयार थे। कणकवली में हमें कहा गया कि हम केवल एक या दो सीट पर चुनाव लड़ सकते हैं। बैनर से हमारी तस्वीर हटा दी गईं। अगर उन्होंने सिर्फ मेरी तस्वीर हटायी तो ठीक था, लेकिन (उप मुख्यमंत्री एवं शिवसेना प्रमुख) एकनाथ शिंदे की तस्वीर हटाने से हमें दुख हुआ।” राणे ने चव्हाण के सिंधुदुर्ग में तीन दिन तक रहने पर भी सवाल उठाया और कहा, “वह अंतिम चरण में बताएंगे कि उनकी बैठकों में क्या निर्णय लिया गया।” उन्होंने कहा कि मतभेद के बावजूद शिवसेना ने गठबंधन बनाए रखने का प्रयास किया।

भाजपा ने सबसे ज्यादा संविधान को नुकसान पहुंचाया : अखिलेश यादव

सपा प्रमुख ने संविधान दिवस मनाने के लिए बीजेपी पर किया कटाक्ष

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। समाजवादी पार्टी प्रमुख अखिलेश यादव ने भाजपा पर फिर हमला बोला है। उन्होंने संविधान दिवस मनाने के लिए भारतीय जनता पार्टी पर कटाक्ष किया और उस पर संविधान को सबसे ज़्यादा नुकसान पहुँचाने का आरोप लगाया। उन्होंने वोट चोरी के आरोपों को दोहराया। अखिलेश यादव ने आरोप लगाया कि भाजपा मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) के ज़रिए लोगों को बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर द्वारा दिए गए सबसे बड़े अधिकार, वोट के अधिकार से वंचित कर रही है।

अखिलेश यादव ने कहा कि हमने देखा कि भाजपा ने संविधान दिवस मनाया। हालाँकि, उन्होंने ही संविधान को सबसे ज़्यादा नुकसान पहुँचाया है... बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर द्वारा दिए गए सबसे बड़े अधिकार, वोट को। एसआईआर के ज़रिए, वे लाखों लोगों को उनके वोट के अधिकार से वंचित करना चाहते हैं। अखिलेश यादव ने भाजपा पर बांग्लादेश के नाम पर पश्चिम बंगाल में षड्यंत्र रचने का आरोप लगाते हुए देश में धर्मनिरपेक्षता और समाजवाद के लिए खतरे पर चिंता व्यक्त की। उन्होंने कहा कि बांग्लादेश के नाम पर, वे पश्चिम बंगाल में षड्यंत्र रच रहे हैं। धर्मनिरपेक्षता को भूल जाइए; वे धर्मनिरपेक्षता का सही अर्थ नहीं समझते... उनकी सरकार में अब कोई समाजवादी नहीं बचा है, कोई धर्मनिरपेक्षता नहीं है, और एसआईआर के साथ, उन्होंने हमारे लोकतंत्र को भी खतरे में डाल दिया है। निर्वाचन आयोग 12 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में मतदाता सूचियों के एसआईआर के दूसरे चरण का संचालन कर रहा है, जिसकी अंतिम मतदाता सूची 7 फरवरी, 2026 को प्रकाशित की जाएगी।

सरकार की विदेश नीति फेल

सपा अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने कहा कि भाजपा सरकार की विदेश नीति फेल है। देश की सीमाएं सुरक्षित नहीं हैं और सिकुड़ रही हैं। आज भाजपा सरकार चीन के साथ व्यापार को बढ़ा रही है। चीन हमारे बाजार पर कब्जा कर रहा है। सीमा पर घुसपैठ कर रहा है। उन्होंने फरहान अख्तर और उनकी पूरी टीम को बधाई भी दी।

अखिलेश यादव ने देखी फरहान अख्तर की फिल्म 120 बहादुर

सपा प्रमुख ने फिल्म निर्देशक और अभिनेता फरहान अख्तर के साथ 1962 के भारत-चीन युद्ध पर आधारित फिल्म देखी । बता दें कि इस युद्ध में भारतीय सेना के 120 अहीर सैनिकों ने मेजर शैतान सिंह के नेतृत्व में रेजांगला पोस्ट पर अपनी जान की परवाह किए बिना अदम्य साहस दिखाते हुए मातृभूमि की रक्षा की थी। अखिलेश यादव ने सपा विधायकों, नेताओं और कार्यकर्ताओं के साथ फिल्म देखने के बाद वीर सैनिकों के अदम्य साहस और वीरता की प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि यह फिल्म हमारे वीर जवानों की वीरता पर आधारित सच्ची घटना है। हमारी सेना दुनिया की सबसे बहादुर सेना है। हमारे जवान कठिन परिस्थितियों में सीमा की रक्षा करते हैं। यह फिल्म सच्ची लड़ाई पर है। फिल्म में दिखाया गया है कि हमारी बहादुर सेना ने किस तरह से शत्रु का सामना किया और बहादुरी से युद्ध लड़ा। मेजर शैतान सिंह को उनकी वीरता के लिए परमवीर चक्र मिला। हम अपनी बहादुर सेना का सम्मान करते है। नई पीढ़ी को सेना की वीरता को देखना चाहिए। हम सभी लोगों को अहीर जवानों की वीरता पर गर्व है। सपा ने अहीर रेजिमेंट की मांग अपने चुनाव घोषणा पत्र में भी की थी। जितने लोग जिन-जिन रेजिमेंट की मांग कर रहे हैं, सबको बनाया जाना चाहिए। बड़े पैमाने पर हमारे नौजवान वर्दी पहनकर देश की सेवा करना चाहते है। युवाओं को देशभक्ति वाली ऐसी फिल्में देखनी चाहिए।

भाजपा नेता की देख-रेख में बनारस में कफ सिरप का रैकेट फल फूल रहा : अजय राय

» कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष ने लगाया आरोप- जमीन कब्जा करा रहे भाजपाई

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

वाराणसी। कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष अजय राय ने भाजपा नेताओं पर आरोप लगाया। कहा कि बनारस में कफ सिरप का रैकेट फल फूल रहा है। भाजपा नेता जमीन कब्जा करा रहे हैं। कफ सिरप मामले में मुख्य आरोपी पुलिस की पकड़ से अभी भी दूर है। मुख्यमंत्री हमेशा कहते हैं कि हम माफियाओं को जमीन के अंदर से निकाल लेंगे, अब वो जमीन खोदने वाली मशीन कहां है।

कहा कि एसआईआर में भाजपा विरोधियों का नाम काटने को बीएलओ पर दबाव बना रहे हैं। बीएलओ आत्महत्या कर रहे हैं। अजय राय ने कहा कि ड्रग लाइसेंस अथॉरिटी का अधिकारी नरेश मोहन ही सरगना है, इसके संपत्ति की जांच हो, इसके खिलाफ कार्रवाई हो। कफ सिरप के मामले में बीते 15 नवंबर को एफआईआर लिखी गई, उसमें शुभम जायसवाल, भोला प्रसाद समेत 28 नामजद के खिलाफ मुकदमा दर्ज है, इसमें शुभम और भोला का पूरा विवरण है। 19 नवंबर को एफआईआर हुई तो नाम के अलावा पिता का नाम और पता अज्ञात कर दिया गया। ऐसे ही एक और एफआईआर में है। अधिकारी एक- एक लाख की शर्ट, 50 हजार के जूते पहन रहे, फॉर्चूनर रेंज रोवर जैसी गा?ियों में चल रहे, इतने पैसे इन अधिकारियों के पास कहां से आ रहे हैं। अजय राय ने कहा मेरे एक साथी अमित पाठक को पुलिस ने मेरे कार्यालय से लूट के आरोप में उठा लिया। केवल अजय राय को बदनाम करने का पूरा प्रयास किया जा रहा है।

भारत के आंतरिक मामलों में दखल न दे पाक : राजपूत

नई दिल्ली (4पीएम न्यूज़ नेटवर्क)। अयोध्या राम मंदिर ध्वजारोहण को लेकर पाकिस्तान के विदेश मंत्रालय के बयान पर कांग्रेस नेता सुरेंद्र राजपूत ने कड़ा हमला बोला है। उन्होंने कहा कि पाकिस्तान को अपनी हद में रहना चाहिए क्योंकि भारत अपने आंतरिक मामलों में दखल बिल्कुल बर्दाश्त नहीं करेगा। राजपूत ने पाकिस्तान की सरकार और सेना प्रमुख आसिम मुनीर पर निशाना साधते हुए कहा, भारत एक मजबूत लोकतंत्र है और हमारा संविधान स्थिर है, जो हर 8-10 साल में नहीं बदलता जैसा पाकिस्तान में होता है। उन्होंने आगे कहा कि भारत अपने मसले खुद सुलझाने में सक्षम है और पाकिस्तान की ये टिप्पणी उसे अपनी मौत बुलाने जैसी है. राजपूत ने दावा किया कि पाकिस्तान बहुत जल्द टूटने की कगार पर है और उसे भारत पर टिप्पणी करने की बजाय अपने हालात सुधारने चाहिए । बता दें पाकिस्तान के विदेश मंत्रालय ने कहा था कि अयोध्या में बाबरी मस्जिद पर राम मंदिर के निर्माण और ध्वजारोहण को पाकिस्तान ने चिंता और गंभीरता के साथ लिया है। भारत के सुप्रीम कोर्ट के फैसले को ध्यान में न रखते हुए पाकिस्तान के विदेश विभाग ने कहा है कि बाबरी मस्जिद सदियों पुरानी एक ऐतिहासिक इबादतगाह थी।

सपा सांसद अवधेश का बयान भ्रामक : भूपेंद्र सिंह चौधरी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष भूपेंद्र सिंह चौधरी ने सपा सांसद अवधेश प्रसाद के बयान को भ्रामक करार दिया है। उन्होंने कहा कि अवधेश प्रसाद का यह कहना कि दलित होने के कारण उन्हें ध्वजारोहण समारोह में आमंत्रित नहीं किया गया, सरासर गलत है। उन्होंने कहा कि 140 करोड़ देशवासियों ने भेदभाव मिटाकर मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम मंदिर के शिखर पर सनातनी ध्वजा स्थापित होने का स्वागत किया है।

राम मंदिर बनाने के लिए समाज के सभी वर्गों ने सर्वोच्च बलिदान दिया है। समाज को जाति, भाषा, क्षेत्र के नाम पर बांटना विपक्ष का राजनीतिक एजेंडा है। राहुल गांधी और अखिलेश यादव इसे आगे बढ़ने का काम कर रहे हैं। जनता अब इसे स्वीकार नहीं करेगी। उन्होंने कहा कि 500 वर्षों के संघर्ष के बाद ध्वजारोहण का ऐतिहासिक क्षण आया है, जब पूरे देश में सनातन धर्म का गौरव पुनर्जीवित हुआ है। हम लोग गुलामी की निशानी के विरोधी हैं। विपक्ष के लोगों की स्मृतियों में आज भी बाबर है, जबकि हम लोग बाबर को आक्रमणकारी मानते है। निश्चित रूप से जितने प्रकार की भी गुलामी है चाहे वह वैचारिक हो या कोई और, हम उसका विरोध करेंगे। उन्होंने कहा कि बिहार चुनाव में वहां की जनता ने कांग्रेस और सपा की जातिवादी राजनीति को नकार दिया है। पीडीए मॉडल पूरी तरह विफल हो गया है। उन्होंने दावा किया कि आने वाले यूपी चुनाव में भी भाजपा प्रचंड बहुमत के साथ सरकार बनाएगी। जनता विकास और राष्ट्रवाद के मुद्दों पर भाजपा के साथ खड़ी है। पश्चिम बंगाल की मुर्शिदाबाद में टीएमसी द्वारा मस्जिद बनाने के एलान पर कहा कि कोई भी धार्मिक स्थान बने, उसकी विधिवत अनुमति हो तो हमें कोई आपत्ति नहीं है।

विदेशों में पढ़ने को मजबूर हो जाएंगे कश्मीरी छात्र : उमर

» सीएम ने वैष्णो देवी मेडिकल कॉलेज में मुस्लिम छात्रों के विरोध पर दी तीखी प्रतिक्रिया

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

श्रीनगर। जम्मू-कश्मीर के मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने वैष्णो देवी मेडिकल कॉलेज में मुस्लिम छात्रों के प्रवेश को लेकर भाजपा और दक्षिणपंथी संगठनों के विरोध पर तीखी प्रतिक्रि या व्यक्त की है।

उन्होंने कहा है कि यदि विरोधी पक्ष वास्तव में गैर-हिंदू छात्रों को कॉलेज से बाहर रखना चाहता है, तो सरकार को इस संस्थान को अल्पसंख्यक कॉलेज घोषित करना चाहिए। साथ ही उन्होंने चेतावनी दी कि इस तरह की राजनीति जारी रही तो कश्मीरी छात्र बांग्लादेश या तुर्की जैसे विदेशी देशों में पढ़ने को मजबूर हो जाएंगे। देखा जाये तो उमर अब्दुल्ला का बयान अप्रत्यक्ष रूप से कश्मीरी छात्रों को ऐसे देशों की ओर प्रेरित करने जैसा है जिनका भारत के साथ शत्रुतापूर्ण रुख जगजाहिर है। तुर्की ने बार-बार पाकिस्तान-प्रायोजित कश्मीर नैरेटिव का साथ दिया है, संयुक्त राष्ट्र में भारत विरोधी भाषण दिए हैं और आतंकवाद पर पाकिस्तान के साथ खड़े होने का इतिहास रहा है। बांग्लादेश आज भले ही अपेक्षाकृत स्थिर हो, लेकिन वहां भी कट्टरपंथी समूहों का प्रभाव और भारत-विरोधी तत्वों की सक्रियता किसी से छिपी नहीं है। एक मुख्यमंत्री से यह अपेक्षा होती है कि वह अपने युवाओं को विश्व-स्तरीय, सुरक्षित और भारत के हितों के अनुकूल विकल्प सुझाए न कि ऐसे देशों का उदाहरण दे, जो भारत की सुरक्षा और विदेश नीति के लिए चुनौती माने जाते हैं। जब भारत विश्व के शीर्ष चिकित्सा शिक्षा केंद्रों में जगह बना रहा है, तो ऐसे बयान राष्ट्र की छवि को कमजोर करते हैं।

भाजपा के एजेंडे पर विपक्ष की सेंध !

राममंदिर के बाद जगन्नाथ व केदारनाथ मंदिर पर रार

» विपक्षी दावं से घबराई बीजेपी

» सपा और टीएमसी सनातनियों को जोड़ने की तैयारी करेगी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

कोलकाता। भाजपा के कड़े हिंदुत्व एजेंडे को धराशाई करने लिए विपक्ष ने भी मंदिर और सनातन की बात प्रारंभ कर दी है। अखिलेश यादव से लेकर ममता बनर्जी तक अब मंदिरों के निमार्ण करने के लिए जहां खजाना खोल रहे हैं वहीं हिंदुओं को रिझाने वाले बातें भी कर रहें हैं। अपने नेताओं के इशारे को समझते हुए यूपी में सपा व पश्चिम बंगाल में टीएमसी ने भी रणनीति बनाने योजना बना ली है। हालांकि यूपी में तो 2027 में विस के चुनाव होने हैं जबकि बंगाल में अगले यानि 2026 में चुनाव हैं।

बंगाल में ममता दीदी विधानसभा चुनाव से पहले हिंदुओं का दिल जीतने की कोशिश में जुट गई हैं। इसी सिलसिले में ममता कैबिनेट ने सिलीगुड़ी में महाकाल मंदिर के निर्माण को मंजूरी दे दी है। उधर विपक्ष के इस कवायद से भाजपा परेशान हो गई है। उसने अभी से रट लगाना आरंभ कर दिया है कि ये सब चुनावी हिंदु बनकर वोट लेने के फिराक में हैं। कैबिनेट बैठक के बाद, वित्त राज्य मंत्री चंद्रिमा भट्टाचार्य ने मीडिया को इस फैसले की जानकारी दी। उन्होंने घोषणा की कि राज्य सरकार माटीगाड़ा के लक्ष्मी टाउनशिप क्षेत्र में मौजूदा पट्टाधारकों से 25.15 एकड़ जमीन अधिग्रहित करेगी। पश्चिम बंगाल मंत्रिमंडल ने एक बड़े प्रस्ताव को मंजूरी दे दी, जिससे सिलीगुड़ी के माटीगाड़ा में एक भव्य महाकाल मंदिर के निर्माण का रास्ता साफ हो गया। यह फैसला मुख्यमंत्री ममता बनर्जी द्वारा अक्टूबर में उत्तर बंगाल के आपदा प्रभावित क्षेत्रों के दौरे के दौरान की गई घोषणा के बाद लिया गया है, जहाँ उन्होंने दार्जिलिंग के प्रतिष्ठित महाकाल मंदिर की शैली में मंदिर बनाने का संकल्प लिया था। मंदिर परियोजना के अलावा, कैबिनेट ने उत्तर बंगाल के डाबग्राम क्षेत्र में एक अंतरराष्ट्रीय स्तर के कन्वेंशन सेंटर के निर्माण को भी मंजूरी दी। यह सुविधा तीस्ता टाउनशिप क्षेत्र में एशियाई राजमार्ग 2 से सटी 10 एकड़ जमीन पर बनाई जाएगी। भट्टाचार्य ने बताया कि इस क्षेत्र में बड़े पैमाने पर होने वाले आयोजनों और सम्मेलनों को बढ़ावा देने के लिए लंबे समय से इस तरह के स्थल की मांग की जा रही थी।

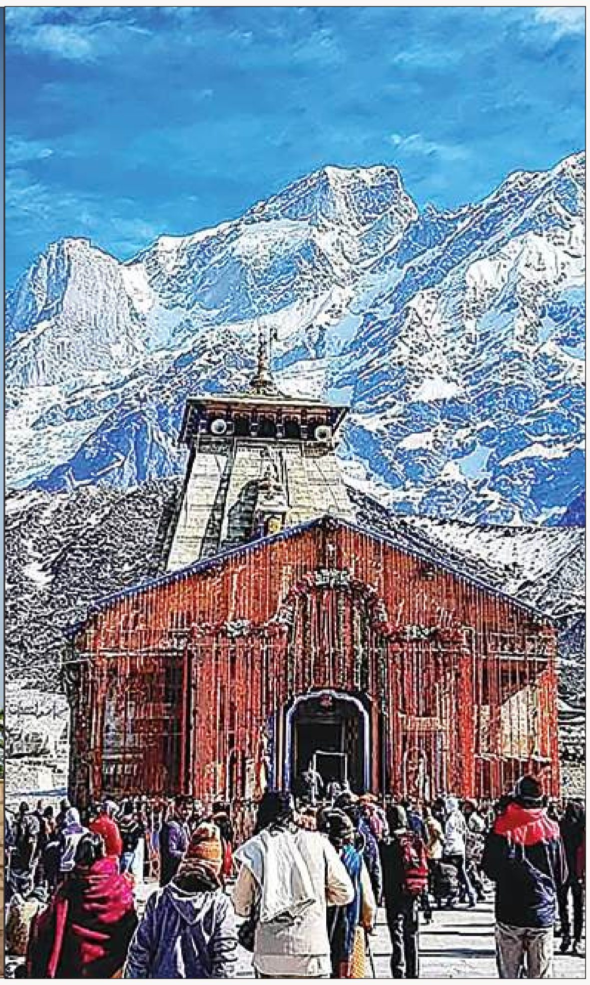

अखिलेश का संकल्प केदारेश्वर महादेव मंदिर का निर्माण पूरा करवाने का

सपा अध्यक्ष ने कहा कि जब उनके द्वारा इटावा में बनाए जा रहे श्री केदारेश्वर महादेव मंदिर का निर्माण संपन्न हो जाएगा तब वो दूसरे मंदिरों के दर्शन का संकल्प भी पूरा करेंगे। सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव ने बिना राम मंदिर का जिक्र किए बताया कि जब इटावा में श्री केदारेश्वर मंदिर का निर्माण पूरा हो जाएगा तो वो अन्य मंदिरों के दर्शन करने भी जाएंगे। हालांकि उन्होंने अपनी पोस्ट में किसी खास मंदिर के नाम का जिक्र नहीं किया है। बता दें कि इटावा में श्री केदारेश्वर महादेव मंदिर का निर्माण उत्तराखंड स्थित केदारनाथ मंदिर की तर्ज पर हो रहा है। ये मंदिर सपा नेता अखिलेश यादव की ओर से बनवाया जा रहा है, जिसकी लागत करीब 50 करोड़ बताई जा रही है। इस मंदिर का निर्माण 2021 में शुरू हुआ था। अगले साल 2026 तक इसके पूरा होने की उम्मीद है। बता दें कि सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव आज तक अयोध्या राम मंदिर के दर्शनों के लिए नहीं गए हैं। साल 2024 में राम मंदिर के उद्घाटन समारोह में सपा अध्यक्ष को न्योता दिया गया था लेकिन, तब भी उन्होंने इस कार्यक्रम से दूरी बनाए रखी। हालांकि वो कई बार कह चुके हैं कि सही समय पर वो अयोध्या जाएंगे।

हम सब तो ईश्वर के बनाएं मार्ग पर बस चलकर जाते हैं, आस्थावान रहें, सकारात्मक रहें : अखिलेश

अखिलेश यादव ने अपने आधिकारिक सोशल मीडिया अकाउंट एक्स पर पोस्ट कर लिखा- पूर्णता ही पूर्णता की ओर ले जाती है। ईश्वरीय प्रेरणा से इटावा में निर्माणाधीन 'श्री केदारेश्वर महादेव मंदिर' के पूर्ण होने पर अन्य मंदिरों के दर्शन का संकल्प भी पूर्ण करेंगे। आस्था जीवन को सकारात्मकता और सद्भाव से भरनेवाली ऊर्जा का ही नाम है। दर्शन के लिए ईश्वरीय इच्छा ही मार्ग बनाती है, वही बुलाती है। सच तो ये है कि हम सब तो ईश्वर के बनाएं मार्ग पर बस चलकर जाते हैं। आस्थावान रहें, सकारात्मक रहें!

एक प्रमुख पर्यटन और सांस्कृतिक पहल : चंद्रिमा भट्टाचार्य

चंद्रिमा भट्टाचार्य ने कहा कि कैबिनेट का यह फैसला मुख्यमंत्री के वादे को पूरा करने की दिशा में एक कदम है। मुख्यमंत्री ने वादा किया था कि उत्तर बंगाल में एक महाकाल मंदिर बनाया जाएगा। उस वादे पर अमल करते हुए, कैबिनेट ने सर्वसम्मति से भूमि हस्तांतरण को मंजूरी दे दी। मुख्यमंत्री बनर्जी ने पहले ही खुलासा कर दिया था कि मंदिर परिसर में क्षेत्र की सबसे बड़ी भगवान शिव की मूर्ति स्थापित की जाएगी, जिससे इसकी पर्यटन अपील और बढ़ेगी। यह कदम राज्य सरकार द्वारा की गई अन्य धार्मिक और सांस्कृतिक पहलों के बाद उठाया गया है, जिसमें दीघा में जगन्नाथ मंदिर का निर्माण और न्यू टाउन में दुर्गा आंगन की योजना शामिल है।

मंदिर परियोजना के लिए जमीन स्वीकृत

कैबिनेट बैठक के बाद, वित्त राज्य मंत्री चंद्रिमा भट्टाचार्य ने मीडिया को इस फ़ैसले की जानकारी दी। उन्होंने घोषणा की कि राज्य सरकार माटीगाड़ा के लक्ष्मी टाउनशिप क्षेत्र में मौजूदा पट्टाधारकों से 25.15 एकड़ जमीन अधिग्रहित करेगी। इसमें से 17.41 एकड़ ज़मीन भूमि एवं भूमि सुधार विभाग से पर्यटन विभाग को हस्तांतरित की जाएगी, जबकि शेष जमीन चरणों में सौंपी जाएगी। सरकार की योजना इस पूरे क्षेत्र को आगामी महाकाल मंदिर के आसपास एक प्रमुख पर्यटन केंद्र के रूप में विकसित करने की है।

राम मंदिर शिखर पर ध्वजारोहण, मोदी बोले

'ये भारतीय सभ्यता के पुनर्जागरण का ध्वज'

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और राष्ट्रिय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) प्रमुख मोहन भागवत ने मंगलवार को अयोध्या में राम जन्मभूमि मंदिर के 191 फुट ऊंचे शिखर पर औपचारिक रूप से भगवा ध्वज फहराया, जो मंदिर निर्माण के पूरा होने का प्रतीक है। इस समारोह में उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ भी मौजूद थे। इस दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि अयोध्या

नगरी भारत की सांस्कृतिक चेतना के एक और उत्कर्ष बिंदु की साक्षी बन रही है। आज संपूर्ण भारत, संपूर्ण विश्व राममय है। हर रामभक्त के हृदय में अद्वितीय संतोष है, असीम कृतज्ञता है, अपार, अलौकिक आनंद है। मोदी ने कहा कि सदियों के घाव भर रहे हैं। प्रधानमंत्री ने कहा कि यह धर्म ध्वज संकल्प का प्रतीक है। यह धर्म ध्वज संघर्ष से उत्पन्न विजय की गाथा है। यह धर्म ध्वज सदियों से संजोए गए स्वप्न का साकार रूप है। यह संतों की भक्ति और समाज की सामूहिक भागीदारी का पावन परिणाम है। आने वाली सदियों और सहस्राब्दियों तक, यह धर्म ध्वज भगवान राम के आदर्शों और सिद्धांतों का उद्घोष करता रहेगा। ये धर्मध्वजा केवल एक ध्वजा नहीं, ये भारतीय सभ्यता के पुनर्जागरण का ध्वज है। इसका भगवा रंग, इसपर रचित सूर्यवंश की ख्याति, वर्णित शब्द और अंकित कोविदार वृक्ष रामराज्य की कीर्ति को प्रतिरूपित करता है।

Sanjay Sharma

editor.sanjayasharma

@Editor_Sanjay

जिद... सच की

किताबों से बढ़ता है आत्मबल

"अक्सर देखने को मिलता है कि अकेलापन और उदासी ने मन को घेरने लगती है। तभी एक डर उपजता है मन सोचा, अगर मैंने अपनी कलाई काट ली तो क्या होगा? धीरे-धीरे खून बहने से शायद मरने में बहुत समय लगेगा? जब ये बाते आईं तो मन को भटकाने के लिए सहज रूप से एक उपन्यास उठा लिया। किताब ने पूरी तरह अपने भीतर खींच लिया।

दुनिया समेत भारत में अकेलापन और उदासी बढ़ रही है। इसकी वजह से आत्महत्याओं की बढ़ोत्तरी हो रही है ये एक गंभीर बात बनती जा रही है। अक्सर देखने को मिलता है कि अकेलापन और उदासी ने मन को घेरने लगती है। तभी एक डर उपजता है मन सोचा, अगर मैंने अपनी कलाई काट ली तो क्या होगा? धीरे-धीरे खून बहने से शायद मरने में बहुत समय लगेगा? जब ये बाते आईं तो मन को भटकाने के लिए सहज रूप से एक उपन्यास उठा लिया। किताब ने पूरी तरह अपने भीतर खींच लिया। बाद एक करीबी मित्र से कहा कि शुरुआत तो बहुत खराब थी, लेकिन किताब की वजह से सप्ताहांत अंत में अच्छा निकल गया। किसी और से मैंने इन बातों का जिक्र नहीं किया। ये एक मनोवैज्ञानिक व्यथा है। अर्थात अगर हमें डिप्रेशन से बचना है तो मित्र बना वों मित्र अच्छी किताबें भी हो सकती हैं। ये बातें बताती हैं कि आत्महत्या पर बात करना आज भी कितना कठिन है। यह भी बताना चाहती हूं कि जब कोई प्रियजन यह बताए कि वह आत्मघाती विचारों से जूझ रहा है, तब परिवार और मित्र कैसे प्रतिक्रिया दें।

उन घड़ियों में मेरी सबसे बड़ी कमी यह थी कि मेरे पास कोई ऐसा भरोसेमंद व्यक्ति नहीं था, जिससे मैं बिना निर्णय के डर के अपनी बात कह सकूं। इसलिए, यह जानना कि प्रतिक्रिया कैसे देनी चाहिए, अत्यंत महत्तवपूर्ण है। दोनों अक्सर आत्मघाती विचारों वाले रोगियों से मिलती हैं। इनके अनुभव और मेरे निजी अनुभव से कुछ स्पष्ट, व्यावहारिक सलाह बनती है ङ्क कब क्या बोलना चाहिए और किस बात से बचना चाहिए।सबसे पहले क्या न कहें पर चर्चा कर लें। दोषारोपण और तात्काल प्रतिक्रिया से बचें। जैसे कह देना, 'तुम ऐसा कैसे सोच सकती हो?' या 'क्या तुमने सोचा कि इससे मेरी जिंदगी पर क्या असर पड़ेगा?' ऐसी टिप्पणियां भय और शर्म पैदा कर देती हैं और व्यक्ति को खुलकर बोलने से रोकती हैं। अक्सर लोग इसलिए अपने विचार किसी से साझा नहीं करते, क्योंकि वे दूसरों को डराना या परेशान करना नहीं चाहते। ऐसे क्षणों में श्रोता का सबसे बड़ा तोहफा शांत और गैर-आलोचनात्मक मौजूदगी होती है। दूसरी गलती अत्यधिक तारीफ या आश्चर्य जताना 'मैंने तुम्हें हमेशा मजबूत माना है।' ऐसा कहने से वह व्यक्ति और अधिक दबाव में आ सकता है और सोचने लगेगा कि 'मुझे बेहतर ढंग से सामना करना चाहिए था' जो कि मदद के बजाय नुकसान कर सकता है। सहानुभूति और मान्यता जरूरी है। सीधे और सरल तरीके से कहें 'यह वाकई बहुत भारी महसूस होता होगा।

(इस लेख पर आप अपनी राय 9559286005 पर एसएमएस या info@4pm.co.in पर ई-मेल भी कर सकते हैं)

आचरण का हिस्सा बने संविधान की भावना

विश्वनाथ सचदेव

पंद्रह अगस्त और छब्बीस जनवरी ऐसी दो तिथियां हैं जब तिरंगा लहरा कर अपना देश-प्रेम प्रकट करना हमें जरूरी लगता है। इसमें पहली तिथि (15 अगस्त, 1947) तो वह है जब हमारा देश स्वतंत्र हुआ था और दूसरी (26 जनवरी, 1950) हमें अपने लिए एक संविधान बनाने की याद दिलाती है। हमारा संविधान दुनिया का सबसे बड़ा लिखित संविधान है, जिसके अनुसार हमने अपना जीवन संचालित करने का संकल्प किया था। इसी संदर्भ में एक तिथि और भी है जो हमें अपने संविधान के प्रति निष्ठा की याद दिलाती है वह तिथि है 26 नवम्बर। वर्ष 1949 में इसी दिन हमारी संविधान सभा ने भारत के संविधान को आत्मार्पित किया था, जो दो माह बाद देश पर लागू हुआ। हमारे संविधान के प्रमुख शिल्पी माने जाने वाले बाबा साहेब अम्बेडकर की 126वीं जयंती पर, दस साल पहले, भारत सरकार ने 26 नवम्बर को संविधान-दिवस के रूप में मनाने का निर्णय किया।

तब से हर साल इस दिन कृतज्ञ राष्ट्र अपने संविधान-निर्माताओं को याद करता है, और यह संकल्प दुहराता है कि समता, स्वतंत्रता, न्याय और बंधुता के आधार पर एक नया समाज बनायेंगे। यह भी शपथ ली जाती है कि हम सांविधानिक मूल्यों को बढ़ावा देने के लिए पूरी निष्ठा के साथ काम करेंगे। पर क्या हम यह काम पूरी ईमानदारी से कर रहे हैं? हमारा संविधान हमें सिखाता है कि भारत का हर नागरिक, चाहे वह किसी भी धर्म, जाति, वर्ण, वर्ग का क्यों न हो, समान है। समता के इस सिद्धांत का मतलब है भारतीय गणतंत्र का हर नागरिक संविधान की दृष्टि में किसी अन्य से किसी भी तरह कमतर नहीं है। सबके अधिकार बराबर हैं— और सबके कर्तव्य भी। इस समता के अभाव में न स्वतंत्रता का कुछ अर्थ रह जाता है और न ही न्याय और बंधुता का। अब हमें अपने आप से यह पूछना है कि समता के इस मानदण्ड पर हम कितने खरे उतरते हैं। जिस जनतांत्रिक व्यवस्था को हमने अपने लिए स्वीकारा है उसमें मतदान का बहुत व्यापक अर्थ है, और बहुत बड़ा अर्थ है।

मतदान के द्वारा हम न केवल उनका चुनाव करते हैं जो हमारा प्रतिनिधित्व अथवा नेतृत्व करते हैं, बल्कि यह भी बताते हैं कि हम न्याय और बंधुता के पक्ष में खड़े है; हम सिर्फ अपने ही हित के लिए नहीं, अपने ही जैसे दूसरे नागरिकों के कल्याण के बारे में भी सोचते हैं। मतदान वस्तुत: व्यक्तियों का

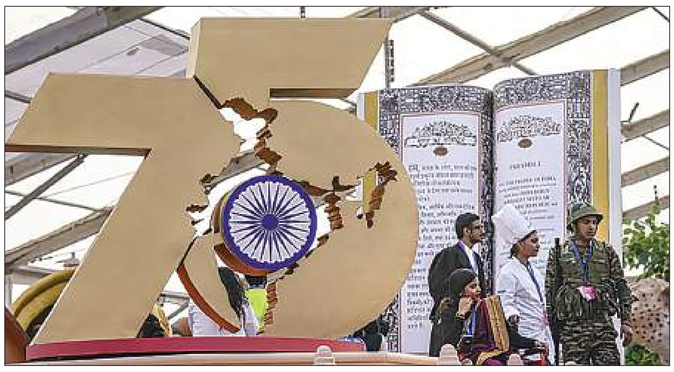

नहीं, एक व्यवस्था का चुनाव है। यह बात समझने और स्वीकारने के बाद हमें यह सोचना है कि मतदान केंद्र पर जाकर हम जो वोट डाल आये हैं, क्या वह उन आदर्शों और मूल्यों के पक्ष में हुआ है या फिर अपने स्वार्थों और अपनी अज्ञानता के चलते हम कोई घटिया समझौता कर आये हैं? ऐसा कोई भी समझौता किसी अपराध से कम नहीं होता। इसलिए, पेटी में वोट डालने अथवा मशीन का बटन दबाने से पहले जागरूक मतदाता को दस बार सोचना चाहिए कि उसका यह कार्य उस संविधान के अनुरूप है या नहीं जिसने हमें मतदान का अधिकार दिया है? बहुत अच्छा है हमारा संविधान। एक पूरा जीवन-दर्शन झलकता है इसमें। हमारे संविधान-निर्माताओं ने हर बात को बड़ी गहराई और विस्तार से सोचा है। पर डॉक्टर अम्बेडकर ने 25 नवम्बर, 1949 को, यानी संविधान स्वीकार किये जाने से एक दिन पहले संविधान सभा में अपने आखिरी भाषण में एक चेतावनी दी थी। उन्होंने चेताया था, 'संविधान चाहे कितना ही अच्छा क्यों न हो, अगर उसे लागू करने वाले लोग अच्छे नहीं हैं तो वह विफल हो जायेगा।' बड़ी शिद्दत से याद किया जाता है संविधान सभा में दिये गये उनके इस भाषण को। उन्होंने जोर देकर कहा था कि समानता और बंधुत्व के बिना स्वतंत्रता का कोई अर्थ नहीं रह जाता। तीसरी चेतावनी जो उन्होंने देशवासियों को दी थी, वह यह थी कि राजनीति में व्यक्ति-पूजा तानाशाही की ओर ले जाती है। सवाल उठता है क्या हमारे संविधान के शिल्पी की इन बातों के बारे में हम कभी सोचते हैं? दुर्भाग्य से इस प्रश्न का उत्तर 'हां' में नहीं है। हम और हमारे नेता संविधान के प्रति आदर दिखाने में भले ही पीछे न रहते हों, पर संविधान को सिर झुकाना और बात है, संविधान के प्रति ईमानदारी से निष्ठावान होना और बात।

हमने अपने बड़े-बड़े नेताओं को, सबसे बड़े नेता को भी, न जाने कितनी बार संविधान की कस्में खाते देखा है, हमारे नेता यह कहने में भी संकोच नहीं करते कि देश का संविधान उनके लिए सबसे बड़ी धार्मिक पुस्तक है। पर इस सबसे बड़ी धार्मिक पुस्तक के प्रति उनका व्यवहार कैसा है? संविधान समानता की बात करता है, हमारे नेता असमानता की होड़ में लगे दिखाई देते हैं, संविधान कहता है धर्म या जाति के आधार पर देश में कोई भेद-भाव नहीं होना चाहिए, हमारे नेता धर्म के आधार पर वोट बैंक बनाने में लगे रहते हैं।

भारतीय संस्कृति में निहित कर्तव्यबोध की अभिव्यक्ति

प्रो. डॉ. भरत

छब्बीस नवंबर का दिन भारतीय गणतंत्र के इतिहास में केवल संविधान अंगीकरण का उत्सव भर नहीं है, यह उन मूलभूत मूल्यों के पुनर्स्मरण का अवसर भी है, जिन पर हमारे लोकतंत्र की आत्मा टिकी हुई है। भारतीय संविधान केवल विधिक प्रावधानों का दस्तावेज़ नहीं है, बल्कि एक नैतिक संकल्प है... एक ऐसी मूल्य-व्यवस्था का घोषणापत्र है जो देश, समाज और व्यक्ति के संबंधों को संतुलन, न्याय और कर्तव्य के ढांचे में देखती है। इसी संदर्भ में यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा कि श्रीमद्भगवद्गीता भारतीय संविधान की नैतिक चेतना का आधार-स्तंभ है। गीता का यह प्रभाव प्रत्यक्ष नहीं, बल्कि दार्शनिक और नैतिक स्तर पर है। वह भारतीय मानस में सदियों से प्रवाहित उस दृष्टि का संहिताबद्ध रूप है, जिसने संविधान निर्माताओं की मूल्य-चेतना को आकार दिया।

संविधान की प्रस्तावना में 'न्याय', 'स्वतंत्रता', 'समानता' और 'बंधुत्व' जैसे शब्द केवल विधिक संकल्प नहीं हैं, बल्कि नैतिक मूल्यों का दार्शनिक प्रतिपादन हैं। यह मूल्य किसी बाहरी प्रभाव से नहीं आए, वे भारतीय परंपरा की लंबी साधना में विकसित हुए हैं। संविधान सभा की चर्चाओं में कई सदस्यों ने बार-बार यह रेखांकित किया कि संविधान की आत्मा को समझने के लिए भारतीय संस्कृति के मूल में निहित 'कर्तव्य-बोध' को देखना आवश्यक है। गीता का यह विशिष्ट योगदान है कि वह 'कर्तव्य' को किसी पुरस्कार, निजी-लाभ या भावनात्मक दबाव से ऊपर रखकर उसे समाज के प्रति उत्तरदायित्व के रूप में स्थापित करती है। यही दृष्टि आगे चलकर संविधान के 'भाग-4क' में नागरिकों के मूलभूत कर्तव्यों के रूप में प्रकट होती है। यद्यपि नागरिकों के मूलभूत कर्तव्यों को संविधान के बयालीसवें संशोधन अधिनियम, 1976 द्वारा बाद में जोड़ा गया था तथा इसे 3 जनवरी 1977 से लागू किया गया था। स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान अधिकांश स्वतंत्रता सेनानियों ने नैतिक राजनीति का जो प्रतिमान स्थापित किया था उसका केंद्र-बिंदु कर्तव्य, आत्मानुशासन व लोककल्याण था और वह गीता-दृष्टि से ही अनुप्राणित था।

यहां ध्यान देने योग्य महत्वपूर्ण बात यह है कि यही नैतिक विचार संविधान सभा के अधिकतर सदस्यों का भी मार्गदर्शन करता था। जब संविधान में मूलभूत कर्तव्यों को शामिल किया गया, तो उसके पीछे यही भारतीय दृष्टि थी कि अधिकार और कर्तव्य परस्पर पूरक हैं। गीता में यह नैतिक आग्रह स्पष्ट दिखाई देता है कि बिना कर्तव्य-पालन के कोई व्यवस्था स्थिर नहीं रह सकती। संविधान भी यही संदेश देता है कि नागरिक के अधिकार उसकी कर्तव्य-निष्ठा से सशक्त होते हैं, कमज़ोर नहीं। भारतीय संवैधानिक लोकतंत्र के शासन का आधार केवल अधिकारों की बहुलता नहीं है, बल्कि संतुलन की व्यवस्था है। न्यायपालिका, विधायिका और कार्यपालिका की त्रि-संरचना संतुलन और विवेक पर आधारित है। गीता में जो जीवन-दृष्टि मिलती है, वह अतिरेक व अतिवाद से बचने और मध्यमार्गीय बुद्धि को अपनाने की शिक्षा देती है।

संविधान में 'युक्तियुक्त विवेक', 'नैतिकता', 'सार्वजनिक व्यवस्था', 'विवेकपूर्ण संतुलन' जैसे सिद्धांत इसी नैतिक परंपरा से प्रेरित जान पड़ते हैं। यह दृष्टि भारतीय संविधान को केवल कानूनी दस्तावेज नहीं रहने देती, बल्कि उसे मूल्य-निष्ठ शासन की आधारशिला बनाती है। भारतीय परंपरा में समाज के कमजोर, पीड़ित, वंचित और हाशिए पर खड़े व्यक्ति की सुरक्षा का दायित्व हमेशा से शासन पर रहा है। गीता में वर्णित दृष्टि यह मानती है कि समाज का वास्तविक धर्म वही है जो दुर्बलों की रक्षा करे, न्याय को प्राथमिकता दे और जीवन में संतुलन स्थापित करे। संविधान का उद्देश्य भी यही है कि ऐसा समाज बनाया जाये जिसमें व्यक्ति की गरिमा सर्वोपरि हो और राज्य लोककल्याण को अपना कर्तव्य समझे। संविधान न केवल नागरिकों को, बल्कि शासन-तंत्र को भी उत्तरदायित्व और पारदर्शिता का पाठ पढ़ाता है। शासन का लक्ष्य 'सेवा' है। गीता के अनुसार भी नेतृत्व वह है जो दूसरों के लिए आदर्श प्रस्तुत करे, समाज की भलाई को प्राथमिकता दे और निर्णयों में निष्पक्षता बनाए रखे।

यही नेतृत्व-दृष्टि भारतीय लोकतंत्र को स्वस्थ और जीवंत बनाती है। जब एक प्रशासक, न्यायाधीश, विधिनिर्माता या जनप्रतिनिधि इस नैतिक दृष्टि को अपनाता है, तो संविधान की आत्मा कार्यान्वित होती है और जब यह दृष्टि खो जाती है, तो संवैधानिक संस्थाएं केवल औपचारिक संरचनाएं बनकर रह जाती हैं। अधिकारों के साथ उत्तरदायित्व, स्वतंत्रता के साथ संयम और विविधता के साथ सहिष्णुता... ये सभी संविधान की उसी नैतिक परंपरा से निकले हैं, जिसकी दार्शनिक पृष्ठभूमि गीता ने दी है। जब समाज इस चेतना को भूलता है, तो कानून की संख्या बढ़ती है, किंतु व्यवस्था कमजोर हो जाती है। आज संविधान दिवस आत्ममंथन का अवसर है... क्या हम संविधान की उस नैतिक दृष्टि के अनुरूप चल रहे हैं जिसने हमें दुनिया का सबसे जीवंत लोकतंत्र बनाया? क्या हम अधिकार मांगते समय अपने कर्तव्यों को भी याद रखते हैं? क्या प्रशासन और राजनीति पारदर्शिता और सेवा की भावना पर चल रही है? क्या हम समानता, न्याय और सह-अस्तित्व को प्राथमिकता देते हैं? इन प्रश्नों का उत्तर हमें बताता है कि संविधान कितनी गहराई से हमारे दैनिक जीवन से जुड़ा है।

हर व्यक्ति को रोज खाना चाहिए ये देसी सुपरफूड्स

संपूर्ण स्वास्थ्य के लिए होता है फायदेमंद

आज की भागदौड़ भरी जिंदगी में हमारे शरीर को स्वस्थ बनाए रखना एक बड़ी चुनौती बन चुकी है। अव्यवस्थित जीवनशैली और जानकारी के अभाव में, जहां एक ओर लोगों में पोषण की कमी है, वहीं दूसरी ओर बीमारियों का खतरा लगातार बढ़ रहा है। यही वजह है कि बहुत से लोग किसी न किसी तरह की बीमारी से परेशान हैं। अधिकांश लोग यह नहीं जानते कि अच्छी सेहत के लिए महंगी विदेशी चीजें नहीं, बल्कि हमारे आसपास मौजूद सस्ते और साधारण प्राकृतिक खाद्य पदार्थ ही पर्याप्त हैं। जिनका सेवन सभी स्वस्थ लोगों को रोजाना करना चाहिए। ये चीजें बाजार में आसानी से और किफायती कीमत पर उपलब्ध हैं। इन पोषक तत्वों से भरपूर खाद्य पदार्थों का नियमित सेवन रोग प्रतिरोधक क्षमता (इम्युनिटी) को बढ़ाता है, मस्तिष्क के कार्य को बेहतर बनाता है और शरीर में होने वाली सूजन को कम करता है। इन्हें अपनी डाइट में शामिल कर आप शरीर और मन को अंदर से मजबूत और स्वस्थ बना सकते हैं।

मूंग दाल

मूंग दाल और अन्य दालें प्रोटीन और फाइबर का बेहतरीन स्रोत हैं। मूंग दाल आसानी से पच जाती है और वज़न घटाने में मदद करती है। दालों का नियमित सेवन मांसपेशियों को मज़बूत करता है और शरीर को आवश्यक ऊर्जा प्रदान करता है।

मेवे और बीज

बादाम, अखरोट और अलसी के बीज हेल्दी फैट, फाइबर और ओमेगा-3 से भरपूर होते हैं। ये मस्तिष्क के कार्य को बेहतर बनाते हैं, कोलेस्ट्रॉल को नियंत्रित करते हैं, और हड्डियों को मजबूत रखने में मदद करते हैं। इन्हें रोजाना भिगोकर खाना सबसे उत्तम माना जाता है। ड्राई फ्रूट्स खाने पर शरीर को ऊर्जा मिलती है, पाचन अच्छा रहता है, स्किन हेल्दी रहती है और शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता मजबूत बनती है सो अलग। वहीं, कई स्वास्थ्य संबंधी दिक्कतों को दूर करने में सूखे मेवों का असर देखने को मिलता है। लेकिन, दिक्कत तब आती है जब व्यक्ति सूखे मेवों का सही तरह से सेवन नहीं करते हैं।

आंवला

आंवला भारतीय सुपरफूड्स में सबसे ऊपर है। आंवला का सेवन करने से इम्यूनिटी पर काफी अच्छा असर पड़ता है। आंवला में विटामिन सी की भरपूर मात्रा होती है, जो रोग प्रतिरोधक क्षमता को मजबूती प्रदान करती है। जो लोग रोजाना एक आंवला खाते हैं उन्हें सर्दी, खांसी जैसी बीमारियां होने की संभावना कम हो जाती है। अगर आप बार-बार बीमार हो जाते हैं, तो आंवला को अपनी डाइट में शामिल कर लें। ये आपको फायदे देगा। पेट के लिए भी आंवला उत्तम माना जाता है। इसमें मौजूद फाइबर पाचन क्रिया को बेहतर रखता है। जिन लोगों को कब्ज की समस्या रहती है, उन्हें तो रोज एक आंवला डाइट में शामिल करना चाहिए।

हल्दी और अदरक

हल्दी में करक्यूमिन और अदरक में जिंजरोल होता है। ये दोनों ही शक्तिशाली एंटी-इंफ्लेमेटरी यौगिक हैं। रोज़ाना इनका सेवन शरीर में होने वाली सूजन को कम करता है, जोड़ों के दर्द से राहत दिलाता है, और दिल की सेहत के लिए बेहद लाभकारी होता है। अदरक का उपयोग पारंपरिक रूप से पाचन एंजाइमों के स्राव को बढ़ावा देने और मतली को कम करके पाचन में सहायता के लिए किया जाता है। हल्दी पाचन तंत्र को शांत करके डायजेशन हेल्थ को सपोर्ट कर सकती है। अदरक हल्दी ड्रिंक पीने से पाचन को उत्तेजित करने और पाचन संबंधी परेशानी को कम करता है।

हंसना मना है

डॉक्टर- कैसे हो? शराब पीना बंद किया या नहीं? मरीज- जी डॉक्टर साहब, बिल्कुल छोड़ दिया है, बस कोई ज्यादा रिक्वेस्ट करता है तो पी लेता हूं। डॉक्टर- बहुत बढ़िया... और यह तुम्हारे साथ कौन भाई साहब हैं? मरीज- जी इनको रिक्वेस्ट करने के लिए रखा हुआ है।

डॉक्टर मरीज से- अगर तुम मेरी दवा से ठीक हो गए तो मुझे क्या इनाम दोगे? मरीज- साहब मैं तो बहुत गरीब आदमी हूं कब्र खोदता हूं...... आपकी फ्री में खोद दूंगा।

भिखारी- पहले आप 10-10 रू. देते थे अब सिर्फ 1 रू. का सिक्का? संता- बाबा पहले मैं कुंवारा था अब शादीशुदा हूं। भिखारी- शर्म नहीं आती मेरे पैसों से अपने बीवी बच्चों को पाल रहा है।

मास्टर जी- पप्पू, तुम्हारे पड़ोस के दादाजी आजकल दिखाई नहीं दे रहे हैं? पप्पू- सर वो गुजर गए! मास्टर जी- अरे, क्या हुआ था उन्हें? पप्पू- वो टीवी पर योग सीखाने वाले बाबा को देखकर योगा कर रहे थे! मास्टर जी- अच्छा, फिर? पप्पू- बाबा ने निर्देश दिया गहरी सांस अंदर लो और जब मैं कहूं तब बाहर छोड़ना... मास्टर जी- अच्छा फिर? पप्पू- फिर क्या अचानक लाइट चली गई और तीन घंटे बाद जब लाइट आई तब तक दादाजी चल बसे थे!

कहानी — सबसे बड़ा हथियार

बादशाह अकबर कामकाज के अलावा भी कई चीजों के बारे में बीरबल से बातचीत किया करते थे। एक दिन बादशाह ने बीरबल से पूछा कि इस दुनिया में सबसे बड़ा हथियार तुम्हारे हिसाब से कौन-सा होता है? बीरबल ने कहा कि संसार में आत्मविश्वास से बड़ा हथियार कुछ और नहीं हो सकता है। यह बात अकबर के समझ में नहीं आई, लेकिन फिर भी उन्होंने कुछ नहीं कहा। उनके मन में हुआ कि समय आने पर इस बात की परख की जाएगी। कुछ दिनों बाद राज्य में एक हाथी बेकाबू हो गया। पता करने पर समझ आया कि वो पागल हो गया है। उसे कर्मचारियों ने जंजीरों से जकड़ लिया था। इसकी खबर जैसे ही बादशाह को पहुंची, तो उन्होंने सीधे महावत से कहा कि जब भी तुम्हें बीरबल आता दिखे तो हाथी की जंजीरों को खोल देना। यह सुनकर महावत हैरान हो गया, लेकिन बादशाह का आदेश था, इसलिए सिर झुकाकर चला गया। अब अकबर ने बीरबल को महावत के पास जाने के लिए कहा। महावत ने भी बादशाह के आदेश का पालन करते हुए बीरबल को आते देख हाथी को जंजीरों से मुक्त कर दिया। बीरबल को इस बात की खबर नहीं थी, इसलिए वो आराम से चल रहे थे। तभी उनकी नजर चिंघाड़ते हुए हाथी पर पड़ी। जैसे ही उन्होंने देखा कि हाथी उनकी ही तरफ आ रहा है। वो कुछ समझ नहीं पाए। कुछ ही देर में उनके दिमाग में हुआ कि बादशाह ने मेरी आत्मविश्वास वाली बात को परखने के लिए ही इस हाथी को मेरे पीछे छोड़ने का आदेश दिया होगा। अब बीरबल इधर-उधर भागने की सोच रहे थे, लेकिन ऐसा कुछ हो नहीं पाया। सामने से हाथी आ रहा था और अगल-बगल में भागकर जाने की जगह नहीं थी। तभी बीरबल ने सामने एक कुत्ते को देखा और उसे टांगों से पकड़कर हाथी की तरफ फेंक दिया। कुत्ता चीखते हुए हाथी से टकराया। उसकी ऐसी चीखें सुनकर हाथी वापस उल्टी दिशा में भागने लगा। कुछ ही देर में इस बारे में अकबर को पता चला, तब जाकर उन्होंने माना कि आत्मविश्वास ही मनुष्य का सबसे बड़ा हथियार है।

7 अंतर खोजें

जानिए कैसा रहेगा कल का दिन

पंडित संदीप आत्रेय शास्त्री

लेखक प्रसिद्ध ज्योतिषविद हैं। सभी प्रकार की समस्याओं के समाधान के लिए कॉल करें-9837081951

मेष — जीवनसाथी के साथ अच्छा समय बीतेगा। व्यवसाय में वृद्धि होगी। नौकरी में सुकून रहेगा। निवेश लाभप्रद रहेगा। कार्य बनेंगे। घर-बाहर सुख-शांति बने रहेंगे।

वृषभ — पार्टनरों का सहयोग समय पर मिलने से प्रसन्नता रहेगी। नौकरी में मातहतों का सहयोग मिलेगा। व्यवसाय ठीक-ठीक चलेगा। आय में वृद्धि होगी।

मिथुन — मित्रों के साथ समय अच्छा व्यतीत होगा। स्वादिष्ट भोजन का आनंद मिलेगा। बौद्धिक कार्य सफल रहेंगे। किसी प्रबुद्ध व्यक्ति का मार्गदर्शन प्राप्त होगा। नौकरी में अनुकूलता रहेगी।

कर्क — जोखिम व जमानत के कार्य टालें। जल्दबाजी न करें। घर-बाहर अशांति रहेगी। कार्य में रुकावट होगी। आय में कमी तथा नौकरी में कार्यभार रहेगा।

सिंह — मित्रों का सहयोग कर पाएंगे। कर्ज में कमी होगी। संतुष्टि रहेगी। सामाजिक प्रतिष्ठा बढ़ेगी। व्यापार मनोनुकूल चलेगा। अपना प्रभाव बढ़ा पाएंगे। नौकरी में अनुकूलता रहेगी।

कन्या — घर-बाहर स्थिति मनोनुकूल रहेगी। प्रसन्नता का वातावरण रहेगा। वस्तुएं संभालकर रखें। दूर से शुभ समाचार प्राप्त होंगे। आत्मविश्वास में वृद्धि होगी।

तुला — व्यावसायिक यात्रा सफल रहेगी। अप्रत्याशित लाभ के योग हैं। भाग्य का साथ मिलेगा। व्यवसाय ठीक चलेगा। नौकरी में अधिकार बढ़ सकते हैं। प्रमाद न करें।

वृश्चिक — आय में निश्चितता रहेगी। अप्रत्याशित खर्च सामने आएंगे। व्यवस्था नहीं होने से परेशानी रहेगी। व्यवसाय में कमी होगी। नौकरी में नोकझोंक हो सकती है।

धनु — व्यावसायिक यात्रा मनोनुकूल रहेगी। धनार्जन होगा। जोखिम उठाने का साहस कर पाएंगे। अज्ञात भय व चिंता रहेंगे। यात्रा सफल रहेगी। नेत्र पीड़ा हो सकती है।

मकर — प्रतिष्ठा वृद्धि होगी। सुख के साधन जुटेंगे। नौकरी में वर्चस्व स्थापित होगा। आय के स्रोत बढ़ सकते हैं। व्यवसाय लाभप्रद रहेगा। निवेश शुभ रहेगा। नई योजना बनेगी।

कुम्भ — लाभ के अवसर हाथ आएंगे। प्रसन्नता का वातावरण रहेगा। मातहतों का सहयोग मिलेगा। किसी सामाजिक कार्यक्रम में भाग लेने का अवसर प्राप्त हो सकता है।

मीन — व्यवसाय ठीक चलेगा। मित्र व संबंधी सहायता करेंगे। आय बनी रहेगी। जोखिम न लें। क्रोध व उत्तेजना पर नियंत्रण रखें। विवाद को बढ़ावा न दें।

धनुष-कृति की फिल्म तेरे इश्क में से हटाया गया अश्लील शब्द

धनुष और कृति सेनन की म्यूजिकल रोमांटिक थ्रिलर फिल्म तेरे इश्क में इस शुक्रवार को सिनेमाघरों में दस्तक देने के लिए बिल्कुल तैयार है। निर्देशक आनंद एल राय और धनुष इस फिल्म के साथ तीसरी बार साथ आए हैं। इससे पहले उनकी जोड़ी ने रांझणा और अतरंगी रे जैसी फिल्मों में कमाल किया है।

साल 2025 अपने अंत पर है और तेरे इश्क में को इस साल की सबसे बड़ी फिल्मों में से एक माना जा रहा है। फिल्म के इंटेंस ट्रेलर को देखने के बाद तेरे इश्क में से बॉक्स ऑफिस पर काफी उम्मीद बंध चुकी है। 28 नवम्बर को रिलीज हो रही धनुष-कृति की इस मूवी को सेंसर बोर्ड से पास कर दिया गया है।

पूरी फिल्म का रिव्यू करने के बाद सेन्ट्रल बोर्ड ऑफ फिल्म सर्टिफिकेट ने मूवी को U/A+16 सर्टिफिकेट दिया है। सेंसर बोर्ड का रवैया पास्ट में बड़ी-बड़ी फिल्मों के प्रति सख्त रहा है और कई-कई सीन से बड़े-बड़े डायलॉग्स तक हटाए गए हैं, लेकिन तेरे इश्क में के साथ ऐसा नहीं हुआ है। बॉलीवुड हंगामा की रिपोर्ट्स के मुताबिक, इस फिल्म को सिर्फ एक कट के साथ सेंसर बोर्ड ने पास कर

दिया है और इसी के साथ मूवी से एक अश्लील सीन को हटाया गया है।

इस रिपोर्ट में ये भी दावा किया गया है कि सेंसर बोर्ड ने फिल्म में से एक भी एक्शन या इंटीमेट सीन और विजुअल्स नहीं हटवाया है, सिर्फ एक डायलॉग मोडिफाई किया गया है। फिल्म के 27 मिनट पर एक ऐसा सीन था, जिसमें अश्लील शब्द का इस्तेमाल था, जिसे रिप्लेस किया गया है। इसके अलावा एंटी स्मोकिंग मैसेज को हिंदी में शामिल करना और एल्कोहल ब्रांड लेबल को धुंधला करने की रिक्रेस्ट सेंसर बोर्ड की तरफ से की गई है।

सभी बदलावों के साथ धनुष और कृति सेनन स्टारर इस फिल्म का रनिंग टाइम 2 घंटे 49 मिनट और 17 सेकंड का है। रिपोर्ट्स के मुताबिक, फिल्म की एडवांस बुकिंग कमाई में 35 हजार से अधिक टिकट बिक्री अभी तक हो चुकी है।

मूवी की कहानी की बात करें तो धनुष को लेकर हमेशा रोमांटिक फिल्में बनाने वाले आनंद एल राय ने इसमें गुस्से के कारण कैसे एक अधूरी प्रेम कहानी जुनून का रूप ले लेती हैं, इसे दिखाया है। 28 नवम्बर को रिलीज इस फिल्म में धनुष (शंकर) और कृति (मुक्ति) का किरदार निभाएंगी।

बॉलीवुड | मन की बात

जब-जब हमला हुआ, हमें बड़ी ओपनिंग मिली : कपिल शर्मा

कपिल शर्मा ने फिल्म 'किस किस को प्यार करूं 2' के ट्रेलर लॉन्च पर करियर और पर्सनल लाइफ को लेकर कई बातें साझा की। इस मौके पर उन्होंने कनाडा में कैप्स कैफे पर हुई फायरिंग पर खुलकर बात की। फायरिंग की घटना के बाद कैसे उनका बिजनेस बढ़ गया, इस बात का भी जिक्र किया। कपिल शर्मा ने जुलाई महीने में कैप्स कैफे कनाडा में खोला था। अचानक 10 जुलाई को अनजान लोगों ने उनके कैफे पर फायरिंग की। इसके बाद 7 अगस्त और 16 अक्टूबर को दो और हमले हुए। इन घटनाओं में कोई घायल नहीं हुआ। इन्हीं हमलों के बारे में कपिल से फिल्म के ट्रेलर लॉन्च पर सवाल किया गया। कपिल ने जवाब देते हुए कहा, 'मुझे लगता है कि वहां के रूल्स और पुलिस के पास शायद ऐसी घटनाओं को कंट्रोल करने की पावर नहीं है। लेकिन जब हमारा केस हुआ, तो यह फेडरल गवर्नमेंट के पास यह मामला गया। कनाडाई पार्लियामेंट में इस पर चर्चा हुई।' कपिल आगे कहते हैं, 'असल में हर फायरिंग की घटना के बाद हमें कैफे में एक बड़ी ओपनिंग मिलती थी। इसलिए अगर भगवान मेरे साथ हैं तो सब ठीक है।' कॉमेडियन ने बताया कि इन हमलों के बाद कई लोगों ने उनसे संपर्क किया। कपिल शर्मा ने फिल्म के इवेंट में आगे कहा, 'मेरा मानना है कि भगवान जो भी करते हैं, हमें उसके पीछे की कहानी नहीं पता चलती है। मुझे कनाडा से बहुत से लोगों के कॉल आए जिन्होंने मुझे बताया कि पहले भी बहुत कुछ हो रहा था। लेकिन मेरे कैफे में फायरिंग के बाद यह एक खबर बन गई। अब वहां कानून और व्यवस्था की स्थिति को सुधारने के लिए कदम उठाए जा रहे हैं। मैंने तो मुंबई या हमारे देश में कभी असुरक्षित महसूस नहीं किया। मुंबई जैसा कोई दूसरा शहर नहीं है।' कपिल शर्मा की फिल्म 'किस किस को प्यार करूं 2' का ट्रेलर रिलीज हो चुका है, इसमें उनका किरदार चार शादी करके मुश्किल में फंस जाता है। यह फिल्म 12 दिसंबर 2025 को थिएटर में रिलीज हो रही है।

पर्सनैलिटी राइट्स की सुरक्षा के लिए शिल्पा शेट्ठी ने किया हाईकोर्ट का रुख

कई कलाकार अपनी पर्सनैलिटी राइट्स की सुरक्षा के लिए कोर्ट पहुंचे हैं। इस कड़ी में शिल्पा शेट्टी का नाम भी सामने आया है। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक, शिल्पा शेट्टी ने बॉम्बे हाई कोर्ट में पर्सनैलिटी राइट्स की सुरक्षा के लिए केस दर्ज कराया है। शिल्पा शेट्टी ने शिकायत की है कि कई वेबसाइट्स उनकी तस्वीरें गैर कानूनी तरीके से इस्तेमाल कर रही हैं या कर चुकी हैं।

एक्ट्रेस की कई छेड़छाड़ की गई तस्वीरें और वीडियो भी सामने आए हैं, जिनकी वजह से शिल्पा ने अदालत जाने का फैसला किया। एचटी के मुताबिक, शिल्पा का केस एडवोकेट सना रईस खान ने फाइल किया है। सना ने बताया, शिल्पा शेट्टी ने दशकों तक काम करके अपनी रेप्युटेशन बनाई है। कोई भी बिना सहमति के उनके नाम या उनकी इमेज को अपना नहीं सकता। उनकी पहचान का बिना इजाजत के इस्तेमाल उनकी इज्जत और मेहनत से कमाई रेप्युटेशन पर हमला है। हमने गलत इस्तेमाल को रोकने के लिए बॉम्बे हाई कोर्ट का दरवाजा खटखटाया है।

इससे पहले ऐश्वर्या राय, अभिषेक बच्चन, अमिताभ बच्चन, करण जौहर, ऋषभ शेट्टी, जया बच्चन, ऋतिक रोशन और अक्किनेनी नागार्जुन जैसे कई कलाकारों ने भी अपनी पर्सनैलिटी राइट्स की

सुरक्षा के लिए कोर्ट का रुख किया है।

बॉम्बे हाई कोर्ट ने हाल ही में कई कलाकारों के लिए आदेश दिया है कि कलाकारों के नाम, इमेज और आवाज को बिना इजाजत कमर्शियल इस्तेमाल न किया जाए।

किसी की मौत के बाद क्यों पहनते हैं सफेद कपड़े, वजह है अजीब

सोमवार, 25 नवंबर 2025 की सुबह बॉलीवुड के ही-मैन धर्मेंद्र के निधन की खबर ने पूरे Film industry और देश भर में शोक की लहर दौड़ा दी। मुंबई के विले पार्ले स्थित श्मशान घाट पर कई नामी हस्तियां उन्हें अंतिम विदाई देने पहुंचीं। सभी कलाकार सफेद कपड़ों में दिखे, क्योंकि हिंदू परंपरा के अनुसार किसी मृत्यु के बाद अंतिम संस्कार के दौरान सफेद कपड़े पहनना अनिवार्य माना जाता है। लेकिन क्या कभी आपने सोचा है कि आखिर ऐसा क्यों होता है? आइए जानते हैं इसके पीछे छिपा धार्मिक महत्व और मान्यता क्या है। सनातन धर्म में अंतिम संस्कार के समय सफेद वस्त्र पहनने की परंपरा बहुत पुरानी है। माना जाता है कि सफेद रंग शांति, पवित्रता और आध्यात्मिक ऊर्जा का प्रतीक है। इसे पहनने का उद्देश्य मन को शांत रखना और दुख की घड़ी में परिवार को मानसिक संबल देना होता है। हिंदू धर्म में सत्य, ज्ञान और सद्भाव को जीवन के तीन प्रमुख गुण बताया गया है, साथ ही सफेद रंग इन्हीं का प्रतिनिधित्व करता है। माना जाता है कि मृत्यु के बाद आत्मा नया सफर शुरू करती है, इसलिए सफेद वस्त्र पहनकर परिवारजन वातावरण को शांत और पवित्र रखते हैं, ताकि दिवंगत आत्मा को शांति का अनुभव हो सके।

अजब-गजब | यह है दिल्ली का अनोखा रेलवे स्टेशन

50 सालों से लोगों के कब्जे में है यह रेलवे स्टेशन

देश की राजधानी दिल्ली का आजादपुर रेलवे स्टेशन एक ऐसा स्टेशन है। जहां पर पहुंच कर आपको समझ नहीं आएगा कि आप रेलवे स्टेशन पर आए हैं या किसी झुग्गी झोपड़ी में। क्योंकि यहां पर रेलवे अधिकारियों के कमरों में दुकान चल रही हैं। दरवाजे तोड़कर लोगों ने इसके अंदर दुकान बना ली हैं। रेलवे स्टेशन पर चारों ओर कपड़े सूख रहे हैं। रेलवे स्टेशन पर ही लोग सोते हुए नजर आएंगे। यही नहीं पटरी से बिल्कुल बगल में 2000 से ज्यादा परिवारों के घर यहां नजर आएंगे। बच्चे पटरी पर खेलते हैं। पटरी पर ही लोग बैठ जाते हैं। यहां चारों ओर कूड़े का भंडार और बहती हुई नालियां हैं।

देश नहीं, बल्कि दुनिया का यह इकलौता ऐसा रेलवे स्टेशन होगा। जहां पर आपको ऐसा नजारा मिलेगा। रेलवे की सरकारी जमीन पर इस तरह का कब्जा देखकर आप भी माथा पकड़ लेंगे। आपको जानकर हैरानी होगी की रात क्या यहां पर दिन में भी जाने से लोग डरते हैं। यहां पर दिनदहाड़े चाकू के बल पर लूटपाट होती है। लड़कियों की किडनैपिंग हो जाती है। यही नहीं, आजादपुर रेलवे स्टेशन का रास्ता भी एक घर के अंदर से होकर गुजरता है। यहां पर ट्रेनों का शेड्यूल पिछले 50 सालों से जो लिखा है। वो वैसा ही लिखा हुआ है। आज तक

कोई उसे अपडेट तक नहीं करने आया है।

यहां पिछले 50 सालों से रह रहे गोपाल ने लोकल 18 की टीम से बातचीत की। उन्होंने बताया कि यह जमीन रेलवे की है। इसमें छुपाने वाली कोई बात नहीं है, लेकिन यहां पर अब 2000 से ज्यादा परिवार रहते हैं। उन्होंने बताया कि सबसे पहले यहां पर एक परिवार आकर बसा था। उसको हटाया नहीं गया। क्योंकि रेलवे के अधिकारी या कोई भी यहां पर नहीं आता है। एक परिवार के बाद दूसरा परिवार आकर रहने लगा। दूसरे परिवार के बाद तीसरा परिवार आया और देखते ही देखते पिछले 50-60 सालों में यहां पर पूरी बस्ती बस गई है।

रेलवे अधिकारियों के कमरों के अंदर तक लोगों ने दुकान खोल रखी है। इसके बावजूद रेलवे के अधिकारियों ने आज तक कुछ नहीं कहा। लोगों ने बताया कि अब यहां पर रहना उनकी मजबूरी है। सरकार अगर हमें कहीं और घर देगी तो हम चले जाएंगे, लेकिन जब तक घर नहीं मिल जाते हैं। तब तक हमें सर छुपाने के लिए कुछ चाहिए। यह जमीन भले ही रेलवे की हो, लेकिन घर हमारी मेहनत की कमाई से बना हुआ है, जिसे हम छोड़कर नहीं जाएंगे।

यहां पर रहने वाली शांति देवी ने बताया कि वह पिछले 60 सालों से यहां पर रह रही हैं। जमीन रेलवे की है, लेकिन घर उनका खुद का बनाया हुआ है, जिसे छोड़कर नहीं जाएंगी। यहां साफ सफाई होती नहीं है। बीमारियां फैली हुई हैं। पहले यहां पर लूट डकैती नहीं थी, लेकिन अब यह इलाका पूरी तरह से सुरक्षित नहीं है। आसपास कुछ ऐसे लोग भी आकर बस गए हैं। जो दिनदहाड़े लोगों के मोबाइल छीन लेते हैं। चाकू दिखाकर लूट करते हैं।

वहीं एक और निवासी अर्णव ने बताया कि वह पिछले 17 सालों से यहां पर रह रहे हैं। यहां कभी रेलवे के अधिकारी नहीं आए और ना ही किसी को हटाया गया। उन्होंने कहा कि जमीन रेलवे की है, लेकिन घर हमारा है, जिसे हमने अपने पैसों से बनवाया है। ऐसे में अब कोई इस रेलवे स्टेशन को खाली नहीं करवा सकता है।

आज संविधान को खतरा, चुनाव आयोग पर है सरकारी पहरा : दिग्विजय

75वें संविधान दिवस पर कांग्रेस नेता ने जताई चिंता

» भाजपा और मोदी सरकार पर साधा निशाना

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नईदिल्ली। कांग्रेस नेता दिग्विजय सिंह ने 75वें संविधान दिवस के अवसर पर चिंता जताते हुए कहा कि सबसे बड़ी चिंता यह है कि क्या संवैधानिक व्यवस्था अक्षुण्ण रहेगी। मध्य प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री ने कहा कि आज सबसे बड़ी चिंता यह है कि क्या संवैधानिक व्यवस्था अक्षुण्ण रहेगी। क्या संवैधानिक संस्थाएं निष्पक्ष तरीके से काम करेंगी? हम सभी देख सकते हैं कि चुनाव आयोग किस तरह पक्षपातपूर्ण तरीके से काम कर रहा है। एसआईआर में हेराफेरी हुई है। चुनाव आयोग से हमारी मांग सरल है। मतदाता सूची साझा करें ताकि हम जांच कर सकें कि नामों का दोहराव तो नहीं है। इससे पहले, राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने संविधान दिवस के अवसर पर मूल संविधान निर्माताओं के दृष्टिकोण और सपनों को कायम रखने के लिए संसद सदस्यों को बधाई दी और प्रसन्नता व्यक्त की। राष्ट्रपति मुर्मू ने कहा इसके अतिरिक्त, मैं सदस्यों के सौभाग्य और समृद्धि के लिए इस स्मरणोत्सव पर आदरपूर्वक नमन करती हूं। संविधान के प्रारूपण के इतिहास को याद करते हुए, उन्होंने डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर को याद किया, जो प्रारूप समिति के अध्यक्ष थे, और भारत के सर्वोच्च कानूनी दस्तावेज का प्रारूपण करने में उनके प्रयासों की प्रशंसा की। संविधान दिवस के ऐतिहासिक अवसर पर आप सभी के बीच आकर मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। आज ही के दिन, 26 नवंबर, 1949 को, संविधान भवन के इसी केंद्रीय कक्ष में, संविधान सभा के सदस्यों ने भारत के संविधान का प्रारूप तैयार करने का कार्य पूर्ण किया था। उसी वर्ष, इसी दिन, हम भारत के लोगों ने, अपने संविधान को अंगीकार किया था। स्वतंत्रता के बाद, संविधान सभा ने भारत की अंतरिम संसद के रूप में भी कार्य किया। उन्होंने कहा, प्रारूप समिति के अध्यक्ष, बाबा साहेब डॉ. भीमराव अंबेडकर हमारे संविधान के प्रमुख निर्माताओं में से एक थे। 26 नवंबर, 1949 को अंगीकार किए गए भारत के संविधान का प्रारूप संविधान सभा द्वारा तैयार किया गया था, जिसकी अध्यक्षता डॉ. राजेंद्र प्रसाद ने की थी, जो बाद में भारत के पहले राष्ट्रपति बने।

संविधान विरोधी 'मनुवादियों' की पहचान करें लोग: सिद्धरमैया

कर्नाटक के मुख्यमंत्री सिद्धरमैया ने लोगों से ऐसे 'संविधान विरोधी मनुवादियों' की पहचान करने का आह्वान किया जो संविधान के बजाय मनुस्मृति को तरजीह देते हैं। सिद्धरमैया ने चेतावनी दी कि डॉ. बी.आर. आंबेडकर के संविधान के लागू होने से पहले देश में एक अलिखित मनुस्मृति का शासन था। वह यहां 'संविधान दिवस समारोह - 2025' का उद्घाटन करने के बाद बोल रहे थे। मुख्यमंत्री ने कहा, .मनुस्मृति में वर्णित मानव-विरोधी और समानता-विरोधी नियमों का आंबेडकर के संविधान में कोई स्थान नहीं था। इसीलिए मनुवादी हमारे संविधान का विरोध करते हैं। उन्होंने कहा कि मनुवादी वे लोग हैं जो 'मनुस्मृति' (हिंदू परंपरा पर आधारित प्राचीन भारतीय ग्रंथ) में विश्वास करते हैं। एक समान समाज का निर्माण करना और समानता को समाप्त करना हमारे संविधान और आंबेडकर की आकांक्षा है।सिद्धरमैया ने उपस्थित लोगों को याद दिलाया कि हम भारत के लोग संविधान का मूल मंत्र है। इस तर्क का प्रतिवाद करते हुए कि आंबेडकर संविधान के निर्माता नहीं थे, सिद्धरमैया ने इस बात पर जोर दिया कि जाति व्यवस्था और इसके खतरों के बारे में आंबेडकर की गहरी समझ ने उन्हें आरक्षण का प्रावधान शामिल करने के लिए प्रेरित किया। मुख्यमंत्री ने खेद व्यक्त किया कि स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व के संवैधानिक आदर्शों के बावजूद, आजादी के कई वर्षों बाद भी ये आकांक्षाएं अधूरी हैं। उन्होंने कहा कि बसवन्ना जैसे सुधारकों द्वारा जाति व्यवस्था के खिलाफ लड़ाई लड़ने के बाद भी, उच्च जाति के लोग जाति से मुक्त नहीं हो रहे हैं। सिद्धरमैया ने कहा कि जाति तभी कमजोर होगी जब निचली जातियां आर्थिक शक्ति हासिल करेंगी।

बेटे को मंत्री बनवाने के बाद तगड़ा झटका

» आरएलएम के कई नेताओं ने छोड़ा उपेंद्र कुशवाहा का साथ

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

पटना। एनडीए के सहयोगी दल आरएलएम को बड़ा झटका लगा है। पार्टी के कई बड़े नेता, जिनमें राष्ट्रीय उपाध्यक्ष जितेंद्र नाथ भी शामिल हैं, ने इस्तीफा दे दिया। यह इस्तीफा पार्टी के लिए एक बड़ा झटका है। इससे पार्टी के सांगठन को नुकसान पहुंचा है। जितेंद्र नाथ के साथ-साथ राज्य महासचिव और प्रवक्ता राहुल कुमार, राजेश रंजन, प्रमोद यादव और कई अन्य नेताओं ने भी पार्टी छोड़ दी है। इस घटनाक्रम ने आरएलएम प्रमुख उपेंद्र कुशवाहा के सामने बड़ी चुनौती पेश कर दी है। बिहार में उपेंद्र कुशवाहा ने अपने बेटे को मंत्री बना दिया, जबकि वे चुनाव ही नहीं लड़े थे।

इससे पार्टी के नेताओं और कार्यकर्ताओं में असंतोष फैल गया। जितेंद्र नाथ ने पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष उपेंद्र कुशवाहा को लिखे अपने इस्तीफे में कहा, मैं लगभग नौ साल से आपके साथ काम कर रहा हूं, लेकिन अब मैं कई राजनीतिक और सांगठनिक फैसलों से खुद को जोड़ नहीं पा रहा हूं। ऐसी स्थिति में साथ काम करना संभव नहीं है। इसलिए, यह उचित है कि मैं अपनी जिम्मेदारियों और पार्टी की प्राथमिक सदस्यता से इस्तीफा दे दूं। जितेंद्र नाथ ने यह भी आरोप लगाया कि बिहार विधानसभा चुनावों के दौरान उपेंद्र कुशवाहा ने सीट-बंटवारे की बातचीत में पार्टी के हितों से समझौता किया। उन्होंने दावा किया कि कुशवाहा ने अपने बेटे के राजनीतिक करियर को बढ़ावा देने के लिए वफादार नेताओं को दरकिनार कर दिया। उन्होंने इस बात पर भी जोर दिया कि कुशवाहा की पत्नी चुनाव जीतीं, लेकिन उन्हें मंत्री नहीं बनाया गया। उन्होंने सवाल उठाया, क्या उन्हें अपनी पत्नी पर भरोसा नहीं है? इसके विपरीत, कुशवाहा के बेटे, जिन्होंने न तो चुनाव जीता और न ही वे विधान परिषद के सदस्य हैं, उन्हें मंत्री बनाया गया।

पश्चिम बंगाल में 26 लाख वोटर गायब!

» मतदाता सूची पर चुनाव आयोग के खुलासे के बाद मचा कोहराम

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

कोलकाता। निर्वाचन आयोग ने कहा कि पश्चिम बंगाल की मौजूदा मतदाता सूची में लगभग 26 लाख मतदाताओं के नाम 2002 की मतदाता सूची से मेल नहीं खा रहे हैं। एक अधिकारी ने यह जानकारी दी। इस खबर के फैलते ही बंगाल से लेकर दिल्ली तक कोहराम मच गया है। टीएमसी ने आयोग, भाजपा व मोदी सरकार पर करारा वार किया है। वहीं निर्वाचन विभाग ने बताया कि राज्य की नवीनतम मतदाता सूची की तुलना पिछली एसआईआर प्रक्रिया के दौरान 2002 और 2006 के बीच विभिन्न राज्यों में तैयार की गई सूचियों से करने पर यह विसंगति सामने आई।

मौजूदा एसआईआर प्रक्रिया के तहत बुधवार दोपहर तक बंगाल में छह करोड़ से अधिक गणना प्रपत्र अपलोड कर दिए गए थे। अधिकारी ने बताया, 'पोर्टल पर अपलोड होने के बाद, इन प्रपत्रों को 'मैपिंग' प्रक्रिया के तहत लाया जाता है, जहां इनका मिलान पिछले एसआईआर रिकॉर्ड से किया जाता है। इससे पहले तृणमूल कांग्रेस सुप्रीमो ने बोंगांव से ठाकुरनगर तक तीन किलोमीटर का विरोध मार्च निकाला, जिसमें पार्टी के बड़े नेता और जोशीले समर्थक झंडे लहरा रहे थे और एसआईआर एक्सरसाइज के खिलाफ नारे लगा रहे थे। उन्होंने इसे अराजक, दबाव डालने वाला और बताया। बनर्जी ने बंगाल में एसआईआर को चुनिंदा तरीके से लागू करने पर ज़ोर दिया, लेकिन बीजेपी शासित असम में नहीं, जबकि वहां चुनाव होने वाले हैं। उन्होंने केंद्र सरकार पर 2026 के विधानसभा चुनावों के लिए वोटरों के नाम हटाने की साजिश रचने का आरोप लगाया।

वोटर लिस्ट बीजेपी के ऑफिस से तैयार की जा रही : ममता

ममता बनर्जी ने वोटर लिस्ट के चल रहे एसआईआर को लेकर इलेक्शन कमीशन ऑफ़ इंडिया की जमकर आलोचना की। उन्होंने आरोप लगाया कि यह राज्य में असली वोटरों को वोट देने से रोकने के लिए राजनीति से प्रेरित चाल है। नॉर्थ 24 परगना जिले के बोंगांव में एसआईआर के खिलाफ एक रैली में बोलते हुए, बनर्जी ने ईसीआई को भाजपा का कमीशन बताया। उन्होंने सवाल किया कि क्या वोटर लिस्ट बीजेपी के ऑफिस से तैयार की जा रही हैं। उन्होंने बंगाल के लोकतांत्रिक ताने-बाने को बचाने के लिए कड़ा विरोध करने की कसम खाई।

नेताओं की नहीं जनता की पार्टी है आप : केजरीवाल

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। आप के स्थापना दिवस के अवसर पर पार्टी संयोजक अरविंद केजरीवाल ने पार्टी कार्यकर्ताओं, स्वयंसेवकों और सभी आम नागरिकों को हार्दिक बधाई दी है। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि आप नेताओं की पार्टी नहीं, बल्कि जनता की पार्टी है।

केजरीवाल ने एक्स पर लिखा, आम आदमी पार्टी के स्थापना दिवस पर मैं देशभर के लाखों साथियों, सभी वॉलंटियर्स और हर उस आम आदमी को दिल से प्रणाम करता हूं, जिन्होंने भरोसा किया कि राजनीति ईमानदारी से भी की जा सकती है। ये पार्टी नेताओं की नहीं, जनता की पार्टी है। चौपालों से लेकर सड़कों तक हमारे वॉलंटियर्स ने दिन-रात मेहनत करके बदलाव की लौ जलाई है।आज जो भी उपलब्धियां हैं, वो जनता के विश्वास और हमारे सिपाहियों की तपस्या का परिणाम हैं। हम वादा करते हैं।

डब्ल्यूटीसी की अंक तालिका में भारत को बड़ा नुकसान

» एक साल में दूसरी बार घरेलू जमीन पर क्लीन स्वीप, सात में से गंवाए पांच मुकाबले

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। भारतीय क्रिकेट टीम का घरेलू जमीन पर संघर्ष जारी है और टीम एक साल के भीतर दूसरी बार घरेलू जमीन पर क्लीन स्वीप हो गई है। भारत को दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ गुवाहाटी टेस्ट में 408 रनों से बड़ी हार का सामना करना पड़ा। ये टेस्ट में रनों के लिहाज से भारत की सबसे बड़ी हार है। इससे पहले टीम इंडिया को 2004 में ऑस्ट्रेलिया ने नागपुर में 342 रन से हराया था। पिछले साल न्यूजीलैंड ने भारत को 0-3 से उसके घर पर हराया था और अब दक्षिण अफ्रीका ने भी भारत को 0-2 से क्लीन स्वीप कर दिया है।

इस हार का असर विश्व टेस्ट चैंपियनशिप (डब्ल्यूटीसी) की अंक तालिका पर भी पड़ा है। इस करारी हार से भारत को बड़ा नुकसान हुआ है और वह डब्ल्यूटीसी की अंक तालिका में पाकिस्तान से भी नीचे पहुंच गया है। भारतीय टीम अब पांचवें स्थान पर खिसक गई है और पाकिस्तान भी फिलहाल उससे ऊपर है। भारत ने नौ में से चार टेस्ट मैच हारे हैं, जबकि इतने ही जीते हैं। उसका एक मुकाबला ड्रॉ रहा है और वह 52 अंक तथा 48.15 पीसीटी के साथ पांचवें स्थान पर है। मुख्य कोच गौतम गंभीर की देखरेख में भारत ने अब तक कुल छह टेस्ट सीरीज खेली हैं। इनमें चार घरेलू और दो विदेशी धरती पर खेली गई हैं। भारत ने गंभीर के कार्यकाल में छह में से दो टेस्ट सीरीज जीती है, जबकि तीन सीरीज गंवाई हैं और एक सीरीज ड्रॉ रही है। पिछले एक साल में घर पर भारत ने न्यूजीलैंड ने तीनों मैच गंवाए, लेकिन वेस्टइंडीज को दो मैचों में हराया। पर अब दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ दोनों टेस्ट गंवा दिए।

रोहित शर्मा फिर बने वनडे के बादशाह

दुबई। भारत के पूर्व कप्तान रोहित शर्मा ने एक बार फिर आईसीसी वनडे बल्लेबाजी रैंकिंग में नंबर एक स्थान हासिल कर लिया है। न्यूजीलैंड के बल्लेबाज डेरिल मिचेल के रेटिंग पॉइंट्स गिरने और आखिरी दो मैचों में भाग नहीं लेने के कारण रोहित ने उन्हें पीछे छोड़ दिया। यह बढ़त ऐसे वक्त पर आई है जब भारत और दक्षिण अफ्रीका के बीच वनडे सीरीज शुरू होने वाली है। रोहित के नंबर एक पर वापसी से भारतीय फैंस और टीम के लिए यह एक अच्छा संकेत माना जा रहा है। हालांकि, मिचेल ने शीर्ष स्थान खोया, लेकिन न्यूजीलैंड के अन्य खिलाड़ियों को रैंकिंग में फायदा मिला। टेस्ट में ऑलराउंडर सूची में बेन स्टोक्स दूसरे नंबर पर पहुंच गए हैं, जबकि भारत के रवींद्र जडेजा शीर्ष पर बने हुए हैं।

कर्नाटक में थम नहीं रहा सत्ता संघर्ष का दौर

सीएम सिद्धारमैया व उपमुख्यमंत्री शिवकुमार के बयानों से गरमाई सियासत, एक दिसंबर तक सत्ता परिवर्तन को लेकर फैसला हो सकता है

» कांग्रेस अध्यक्ष ने सभी नेताओं को शांत रहने को कहा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। कर्नाटक में मुख्यमंत्री पद को लेकर चल रही खींचतान कम नहीं हो रही है। जहां सीएम सिद्धारमैया व उपमुख्यमंत्री डीके शिवकुमार के बीच अनबन कभी-कभी सतह पर आ जा रही है। इसबीच कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने कहा है कि शीर्ष नेतृत्व ही कोई फै सला लेगा।

कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष और उपमुख्यमंत्री डीके शिवकुमार ने एक इशारों भरा बयान दिया है। उन्होंने कहा कि शब्द की ताकत ही दुनिया की ताकत है और वादा निभाना सबसे बड़ी शक्ति है। उनके इस बयान को सिद्धारमैया के बाद सत्ता बदलाव की मांग और उससे जुड़े राजनीतिक दबाव के संकेत के रूप में देखा जा रहा है।

सीएम बदलने की सुगबुगाहट तेज

कांग्रेस में इस समय मुख्यमंत्री सिद्धारमैया और शिवकुमार के बीच लीडरशिप को लेकर मतभेद की चर्चा तेज है. शिवकुमार का दावा है कि विधानसभा चुनाव जीतने के बाद ढाई साल के बाद सीएम बदलने का वादा हुआ था, जबकि सिद्धारमैया गुट इस बात को मानने से इनकार करता है. सूत्रों के मुताबिक कांग्रेस में 1 दिसंबर तक सत्ता परिवर्तन को लेकर फैसला हो सकता है।

वादा निभाओ, यही असली ताकत : शिवकुमार

एक कार्यक्रम को संबोधित करते हुए, शिवकुमार ने कहा, एक कहावत है कि शब्द की ताकत ही दुनिया की ताकत है, यानी हमारे लिए अपना वादा निभाना दुनिया की सबसे बड़ी शक्तियों में से एक है। चाहे वह जज हों, भारत के राष्ट्रपति हों, मैं, आप या आपके घर का कोई भी व्यक्ति, यही सबसे बड़ी शक्ति है और हमें इसका सम्मान करना चाहिए। इसके बाद शिवकुमार ने कुर्सी वाली टिप्पणी की. अपने आस-पास खड़े समर्थकों से बैठने का आग्रह करते हुए उन्होंने कहा, जो लोग मेरे पीछे खड़े हैं, उन्हें कुर्सी की कीमत नहीं पता. उन्हें जो भी कुर्सियां मिलती हैं, उन पर बैठने के बजाय, वे बेवजह खड़े रहते हैं। इस पर वहां मौजूद लोग हंस पड़े।

सभी को साथ लाएंगे : मल्लिकार्जुन खरगे

कर्नाटक में मुख्यमंत्री सिद्धारमैया और उपमुख्यमंत्री डीके शिवकुमार के बीच सत्ता संघर्ष को सुलझाने के लिए कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने वरिष्ठ नेताओं की बैठक बुलाई है, जिसमें राहुल गांधी भी शामिल होंगे, ताकि सामूहिक परामर्श से अंतिम निर्णय लिया जा सके। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने गुरुवार को कहा कि उन्होंने चल रहे सत्ता संघर्ष को सुलझाने के लिए वरिष्ठ नेताओं की एक बैठक बुलाई है। उन्होंने ज़ोर देकर कहा कि सामूहिक परामर्श के बिना कोई भी निर्णय नहीं लिया जाएगा। खड़गे ने कहा कि अंतिम निर्णय लेने से पहले राहुल गांधी, मुख्यमंत्री सिद्धारमैया और उपमुख्यमंत्री डीके शिवकुमार चर्चा में शामिल होंगे। खड़गे ने कहा कि मैं सभी को चर्चा के लिए बुला रहा हूँ और राहुल गांधी भी उस बैठक में मौजूद रहेंगे। मुख्यमंत्री और उपमुख्यमंत्री भी वहाँ मौजूद रहेंगे। सभी से चर्चा के बाद ही कोई निर्णय लिया जाएगा।

'गैर-नागरिकों को स्वत: ही मतदान का अधिकार नहीं मिल जाना चाहिए'

» सीजेआई ने घुसपैठियों द्वारा आधार कार्ड बनवाने पर चिंता जताई

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। एसआईआर को लेकर पश्चिम बंगाल सहित कई राज्यों में बवाल हो रहा है। इस बीच वोटिंग लिस्ट के स्पेशल समरी रिवीजन (एसआईआर) पर सुनवाई के दौरान, सुप्रीम कोर्ट की पीठ ने घुसपैठियों या गैर-नागरिकों द्वारा लंबे समय तक रहने के कारण आधार कार्ड बनवाने पर चिंता जताई।

मुख्य न्यायाधीश कांत की अध्यक्षता वाली पीठ ने इस बात पर ज़ोर दिया कि आधार सामाजिक कल्याण योजनाओं तक पहुंच प्रदान करता है, लेकिन इससे गैर-नागरिकों को स्वत: ही मतदान का अधिकार नहीं मिल जाना चाहिए। बिहार में हुई एसआईआर प्रक्रिया के दौरान

सुप्रीम कोर्ट ने कहा था कि मतदाता को पहचान सत्यापन के लिए आधार समेत 13 में से कोई एक दस्तावेज देना होगा। इनमें से एक भी उपलब्ध होने पर एसआईआर की प्रक्रिया पूरी मानी जाएगी। यूपी प्रशासन ने भी पिछले दिनों लोगों का भ्रम दूर करने के लिए आधार को एसआईआर के लिए एक वैध दस्तावेज बताया था. लेकिन अब सुप्रीम कोर्ट के आधार को लेकर उठाए जा रहे सवाल, मामले को और जटिल कर सकते हैं।

एआईएडीएमके छोड़ने पर घिरे सेंगोट्टैयन

» पार्टी बोली- निजी हित एआईएडीएमके के हितों से बड़े हो गए

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

चेन्नई। केए सेंगोट्टैयन के निजी हित एआईएडीएमके के हितों से बड़े हो गए हैं और उन्होंने स्पष्ट रूप से उस पार्टी और चुनाव चिन्ह का त्याग किया है जिसने उन्हें पहचान दिलाई, पार्टी प्रवक्ता कोवई सत्यन ने गुरुवार को आरोप लगाया। यह आरोप सेंगोट्टैयन के पार्टी प्रमुख विजय की मौजूदगी में तमिला वेत्री कझगम (टीवीके) में शामिल होने के तुरंत बाद लगाया गया।

एआईएडीएमके प्रवक्ता ने एक स्व-निर्मित वीडियो में कहा कि लोग आ सकते हैं और लोग जा सकते हैं, लेकिन पार्टी हमेशा बनी रहती है। सेंगोट्टैयन 234 निर्वाचन क्षेत्रों में से एक को छोड़कर सभी का प्रतिनिधित्व करते हैं। उनका प्रतिनिधित्व दो निर्वाचन क्षेत्रों, चुनाव चिन्ह और एआईएडीएमके से उपजा

है। उनके निजी हित पार्टी के हितों से बड़े हो गए हैं। उनका निजी हित पार्टी के हित से बड़ा हो गया है, इसलिए उन्होंने दूसरी पार्टी के साथ आगे बढ़ने का फैसला किया, जो स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि उन्होंने स्पष्ट रूप से उस पार्टी और चुनाव चिन्ह को त्याग दिया है जिसने उन्हें पहचान दिलाई। उन्होंने कहा कि पहले पार्टी ने उन्हें मान्यता देने की जिम्मेदारी अपने कंधों पर ली थी, लेकिन अब यह जिम्मेदारी टीवीके के पास है और इसके लिए वह उन्हें शुभकामनाएं देते हैं। उन्होंने वीडियो में कहा कि कोई भी व्यक्ति पार्टी, उसके प्रतीक या विचारधारा से बड़ा नहीं होता। हमें इससे ज़्यादा नुकसान नहीं होता। अब उन्हें कंधे पर उठाने की बड़ी ज़िम्मेदारी टीवीके पर आ गई है, टीवीके को शुभकामनाएँ। अन्नाद्रमुक से निष्कासित नेता और नौ बार विधायक रहे केए सेंगोट्टैयन गोबिचेट्टीपलायम विधायक पद से इस्तीफ़ा देने के एक दिन बाद गुरुवार को अपने समर्थकों के साथ तमिलगा वेट्री कज़गम (टीवीके) में शामिल हो गए।

सेंगोट्टैयन समर्थकों के साथ टीवीके में शामिल

इससे पहले, सेंगोट्टैयन समर्थक अपने नेता का पार्टी म`ें स्वागत करने के लिए टीवीके कार्यालय के बाहर जमा हुए। टीवीके महासचिव एन आनंद ने गोबिचेट्टीपलायम से आए समर्थकों का स्वागत किया। सेंगोट्टैयन का इरोड जिले में दबदबा है, वे अपने गृह क्षेत्र से लगभग नौ बार निर्वाचित हुए हैं। 2026 में होने वाले विधानसभा चुनावों में अब केवल 7 महीने ही बचे हैं, ऐसे में उनके टीवीके में शामिल होने से इरोड में टीवीके के पक्ष में माहौल बन सकता है। बुधवार को विधायक पद से इस्तीफा देने के बाद उन्होंने टीवीके प्रमुख विजय से भी मुलाकात की।

मऊ में 6 महीने के अंदर होगा उपचुनाव

» विधानसभा सचिवालय ने जारी किया आदेश

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। उत्तर प्रदेश में जल्द ही एक बार फिर से उपचुनाव होने जा रहे हैं। विधानसभा सचिवालय की ओर से मऊ की घोसी विधानसभा सीट रिक्त घोषित कर दी गई है। समाजवादी पार्टी के विधायक सुधाकर सिंह के निधन के बाद ये सीट खाली हुई हैं। जिसके बाद अब जल्द ही इस सीट पर उपचुनाव कराएं जाएंगे।

विधानसभा सचिवालय की ओर से इस संबंध में अधिसूचना जारी कर दी गई है। इसे लेकर राज्यपाल, मुख्यमंत्री, विधानसभा के सदस्य, डीएम मऊ और मुख्य निर्वाचन अधिकारी समेत सभी संबंधित विभागों को इसकी जानकारी दे दी गई है. ऐसे में अब छह महीने के भीतर इस सीट पर उपचुनाव कराए जाएंगे। मऊ की घोसी विधानसभा सीट काफी चर्चित रही है। 2022 के बाद दूसरी बार इस सीट पर अब उपचुनाव कराए जाएंगे। इस सीट पर 2022 में भारतीय जनता पार्टी से समाजवादी पार्टी में शामिल हुए दारा सिंह चौहान को जीत मिली थी. लेकिन, चुनाव के एक साल के भीतर ही उन्होंने विधायक पद से इस्तीफा दे और फिर से बीजेपी में शामिल हो गए थे।

सपा विधायक के निधन से खाली हुई सीट

घोसी विधानसभा सीट से क्षेत्रीय सपा विधायक सुधाकर सिंह का पिछले हफ्ते 20 नवंबर को बीमारी के चलते निधन हो गया था। नियमों के मुताबिक अगर किसी जन प्रतिनिधि की अचानक मृत्यु होने, अयोग्य ठहराए जाने या इस्तीफा देने के बाद कोई सीट खाली हो जाती है तो उस पर छह महीने के भीतर उपचुनाव कराए जाते हैं।

बीजेपी को हराकर विधायक बने थे सुधाकर सिंह

दारा सिंह के इस्तीफे के बाद घोसी सीट पर 2023 में बीजेपी ने फिर से दारा सिंह चौहान को टिकट दिया जबकि समाजवादी पार्टी ने सुधाकर सिंह को टिकट दिया था। इस चुनाव में बीजेपी और सपा के बीच आमने-सामने की टक्कर सुधाकर सिंह ने बीजेपी प्रत्याशी को 50 हज़ार वोटों से हरा दिया था। सुधाकर सिंह की ये जीत खासी सुर्खियों में रही थी। लेकिन ढाई साल बाद अब ये सीट एक बार फिर से खाली हो गई है ऐसे में 2027 से पहले घोसी में एक बार फिर से बीजेपी और सपा के बीच मुकाबला देखने को मिलेगा।

आपत्तिजनक कंटेंट पर सख्त हुआ सुप्रीम कोर्ट

सोशल मीडिया पर सरकार से 4 हफ्तों में मांगा जवाब

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने केंद्र से सोशल मीडिया और ओटीटी प्लेटफॉर्म पर आपत्तिजनक कंटेंट पर चार हफ्ते में जवाब मांगा है। मुख्य न्यायाधीश ने कहा कि अनचाहा अश्लील कंटेंट उपयोगकर्ता को बिना अनुमति देखना पड़ता है, जो चिंता का विषय हैन्यायमूर्ति जयमाला बागची ने कहा कि ऐसे कंटेंट के लिए स्पष्ट चेतावनी देना आवश्यक है।

सोशल मीडिया और ओटीटी प्लेटफॉर्म पर काफी संख्या में आपत्तिजनक कंटेंट मौजूद है, जिस पर सुप्रीम कोर्ट ने केंद्र सरकार से 4 हफ्तों में जवाब मांगा है। मामले की सुनवाई के दौरान मुख्य न्यायाधीश ने कहा कि जैसे ही आप फ़ोन चालू करते हैं और कुछ ऐसा आ जाता है जो आप नहीं चाहते या आप पर थोपा जाता है, तो क्या? अश्लीलता किताबों, पेंटिंग आदि में हो सकती है. अगर नीलामी होती है, तो प्रतिबंध भी हो सकते हैं. न्यायमूर्ति जयमाला बागची ने कहा कि ऐसे लोगों के लिए चेतावनी होनी चाहिए जो ऐसा कंटेंट से चौंक सकते हैं। मुख्य न्यायाधीश सूर्यकांत ने कहा, देखिए, मुद्दा यह है कि अस्वीकरण दिया जाता है और शो शुरू हो जाता है. लेकिन जब तक आप इसे न देखने का फैसला करते हैं, तब तक यह शुरू हो जाता है।८

चेतावनी कुछ सेकंड के लिए हो सकती है, फिर शायद आपका आधार कार्ड वगैरह मांगा जाए, ताकि देखने वाले की उम्र पता लग सकेऔर फिर कार्यक्रम शुरू हो। जस्टिस बागची ने कहा, इसको लेकर एक चेतावनी होनी चाहिए, अगर ऐसा कुछ अनचाहा कंटेंट किसी यूजर को चौंकाता है। ये सिर्फ 18 साल से अधिक उम्र जैसा नहीं, बल्कि ये कहना कि ऐसा कंटेंट आम उपभोग के लिए नहीं है।

स्वामी 4 पीएम न्यूज नेटवर्क्स प्राइवेट लिमिटेड के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक **संजय शर्मा** द्वारा आस्था प्रिंटर्स, 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से मुद्रित एवं 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से प्रकाशित। **महाराष्ट्र कार्यालय**:- 2 जी, कृष्णा कुटीर सागरिका CHS जुहू तारा रोड जुहू- मुंबई- 400049। **संपादक** - संजय शर्मा, **विधि सलाहकार**: सत्यप्रकाश श्रीवास्तव, मोहम्मद हैदर, **वित्तीय सलाहकार**: संदीप बंसल, **कार्टूनिस्ट**: हसन जैदी, **दूरभाष**: 0522- 4078371 | **Email**: daily4pm@gmail.com | **website**: www.4pm.co.in | **RNI-UPHIN/2015/62233 डाक पंजी. सं- SSP/LW/NP-495/2018-2020** *इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद लखनऊ न्यायालय के अधीन ही होंगे।